मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

सहाबा किराम (रज़ि०) के एहसान

"इस वक़्त मुसलमानों के पास अमल व दीन को जो कुछ पूंजी है, ख़ैर व बरकत के कुछ ख़ज़ाने है, इस्लामी पहचान की श्रेष्ठता, इस्लाम का प्रचार, भलाई के काम के जो कुछ वजह और भलाई की जो तौफ़ीक़ है और सच पूछिए तो दुनिया में इस वक़्त जो कुछ सुधार व भलाई नज़र आ रही है, वह सब सहाबा किराम रज़ि० की कुर्बानियों, इख़लास, हिम्मत व त्याग का नतीजा और उनके पाक नफ़्स की बरकत व नूरानियत है।"

• हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

NOV 15

₹10/-

मुकम्मल पैरवी
मुकम्मल ईमान की बुनियाद

देखिए, हम आपको एक बात पते की बताते हैं। उसे लेकर जाइए, इंशाअल्लाह उम्र भर के लिए काफ़ी होगा। सहाबा रज़ि० आप स०अ० से पूछा करते थे कि दीन के हुक्म बहुत हो गए हैं हमको कोई एक ऐसी बात बता दीजिए जो व्यापक हो। जिसे हम पल्लू में बांध लें। उसी तरह हम आपसे एक बात कहते हैं कि सारे जीवन के लिए कार्य प्रणाली है। वह क्या है? हुज़ूर स०अ० ने फ़रमाया: "तुममें से कोई व्यक्ति ईमान वाला नहीं हो सकता, जब तक कि उसके दिल की इच्छा, उसके मन की चाहत, उसकी तबियत की मांग उस चीज़ के अधीन न हो जाए जिसको मैं लेकर आया हूं।" और देखिए आप स०अ० से बढ़कर किसी के अख़्लाक़ (आचरण) इतने बुलन्द व आली (श्रेष्ठ) नहीं थे, कोई अपने बन्दे होने पर इतना गर्व नहीं करता था। लेकिन यहां मुहम्मद स०अ० ने एक वचन वक्ता की बात करके अपनी ओर इशारा किया है और इसमें ख़ास वज़न पैदा कर दिया है जिसको साहित्य का शौक़ रखने वाले समझ व जान सकते हैं। आप यूं कह सकते थे कि जब तक वह अपनी दिल की इच्छाओं को अल्लाह के हुक्म व कुरआन व हदीस के अधीन न कर दे, लेकिन यहां पर नबी करीम स.अ.की नबूवत का जो स्थान था और आप की नबूवत का जो हक़ था और आपकी नुबूवत का जो दर्जा था और इसमें वे इस समय लोगो की इच्छाओं का और उसकी समझ का और स्तर का भी ख़्याल किया। कि हदीसों में कम ऐसा आता है कि एकवचन कर्ता के रूप मे बोलते हों जैसे कि यहां:

"तुममें से कोई व्यक्ति उस समय तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि उसके दिल की इच्छा उसके अधीन न हो जाए जिसे मैं लेकर आया हूं। मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह जिसे लेकर आए हैं कि आप नाम ले लेते। उसके अधीन न हो जाए से इसके अन्दर एक ख़ास क़िस्म की ताक़त पैदा हो गयी। इस जुम्ले में ग़ैरते नबवी है। अल्लाह की ग़ैरत के बाद अगर कोई भी ग़ैरत उसके बराबर नहीं। बादशाहों के ग़ैरत उसके सामने गर्द, यहां नबूवत की ग़ैरत है, जिसको मैं लेकर आया हूं, जिसने उसके ख़िलाफ़ काम किया, मानो उसने मेरी नुबूवत के ख़िलाफ़ बग़ावत की, मेरे रिसालत के पद से उसने विद्रोह किया।

तो हम लोगों को चाहिए कि हर काम करने से पहले ये ध्यान कर लें कि हम उसे अपनी मन की मर्ज़ी के लिए तो नहीं कर रहे हैं और यह आप स०अ० के फ़रमान और कुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ तो नहीं। बस यह सारी ज़िन्दगी के लिए काफ़ी है।"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:११ नवम्बर २०१५ ई० वर्ष:७

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

निरीक्षक
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री- दारे अरफ़ात

सह सम्पादक
मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

मुद्रक
मो० हसन नदवी

अनुवादक
मोहम्मद सैफ़

E-Mail: markazulimam@gmail.com

www.abulhasanalinadwi.org

इस अंक में:

देश की नाजुक हालत......................................२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुहम्मद स०अ० की महफ़िल के आदाब............३
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

अल्लाह और उसके रसूल स०अ० से मुहब्बत......५
मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

सीरत–ए–नबवी कुरआन करीम के आइने में.......६
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी...........७
मौलाना शम्स तबरेज़

सेना के प्रशिक्षण में आप स०अ० का प्रभाव.....१०
उस्ताज़ अब्दुर्रहमान अज़्ज़ाम

फ़िलिस्तीन की समस्या के हल के बिना शांति....१२
प्रोफ़ेसर ए. के. महापात्रा

सफ़ों को ठीक करना नमाज़ के कमाल............१३

जन्नत का हक़दार..१५
मुहम्मद अरमुग़ान नदवी

सीरते नबवी के आइने में एक तस्वीर...............१६
जाफ़र मसऊद हसनी नदवी

धर्मों के अन्तर्गत व्यापकता व सीमितता का.......१९
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

सम्पादक: बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली, यू०पी०.229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण, मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

सम्पादकीय

देश की नाज़ुक हालत

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अत्याचार एक ऐसी बीमारी है कि जब वह किसी समुदाय के अन्दर पैदा हो जाती है तो अन्दर ही अन्दर उसे खोखला कर डालती है। यह एक ऐसी आग है कि जब इसको जलाने के लिए कुछ नहीं मिलता तो वह आग स्वयं को जलाकर मौत के घाट उतार देती है। किसी भी देश के लिए यह बहुत ही ख़तरनाक बीमारी है। और अगर इसका इलाज जल्दी न किया जाए तो धीरे–धीरे यह महामारी की रूप धारण कर लेती है और इसका उपचार मुश्किल हो जाता है।

मानवता का अत्याचार से कोई रिश्ता नहीं। मनुष्य की बस्ती में जब अत्याचार होता है तो वास्तव में ऐसे दरिन्दे लोगों की ओर से होता है जिनका गोश्त और हड्डी तो इन्सानों के जैसे ही होती है लेकिन उनके दिल भेड़ियों के होते हैं!

भारतवर्ष की धरती प्रेम की धरती है। दुनिया के विभिन्न लोगों का यहां आगमन हुआ और इस धरती ने उनका ऐसा स्वागत किया कि वे यहीं के होकर रह गए। हज़ारों साल पहले यहां द्रविड़ बसते थे। उनकी एक संस्कृति थी और एक सभ्यता थी फिर आर्या ने यहां बसेरा किया फिर दूसरी क़ौमें भी आती रहीं। सबने यहां एक प्रकार का लगाव महसूस किया, सब मिल–जुल कर रहे, बीच में बहुत सी क़ौमों पर अत्याचार की आग भड़काने का प्रयास किया गया किन्तु वह असफल कर दिया गया और हालात नियन्त्रण में रहे।

इधर कुछ समय से साम्प्रदायिक सोच रखने वालों का एक वर्ग ऐसा पैदा हो गया है जो देश को बांटना चाहता है, अपने लाभों के लिए वह सब कुछ करने को तैयार है। इसके लिए वे देश की दुश्मन ताक़तों से भी हाथ मिलाने को तैयार हैं और मानवता की दुश्मन क़ौम के साथ संबंध लगातार ऐसे बढ़ाए जा रहे हैं कि जो स्वयं इस देश के लिए बड़ा ख़तरा बनता जा रहा है। इधर ऐसी घटनाएं भी सामने आ रही हैं जो इस साम्प्रदायिक व उग्र सोच का सुबूत देती हैं। इसके अन्दर जाने की आवश्यकता नहीं वह सब खुली किताब की तरह लोगों के सामने है यद्यपि उसके तर्क करने की आवश्यकता है इसलिए कि पूरी दुनिया में देश की छवि ख़राब हो रही है।

संतुष्टि की बात यह है कि देश में ऐसा विचारक वर्ग है जो इसके लिए प्रयासरत है और उसको अपने सम्मान से अधिक देश का सम्मान प्रिय है और वह उसके लिए कुर्बानी भी देने को तैयार है। ऐसे लोगों को आगे बढ़ाने की ज़रूरत है और उनकी सोच को सम्मान की दृष्टि से देखने की आवश्यकता है।

दुनिया की दृष्टि में कभी भी देश की छवि इतनी ख़राब नहीं हुई और न इतनी साम्प्रदायिकता पैदा हुई जो आज नज़र आ रही है। जिसका परिणाम यह है कि हर वर्ग परेशान है और दुनिया के विभिन्न देशों में इसके ख़िलाफ़ आवाज़ें उठायीं जा रही हैं। यह बहुत ही नाज़ुक स्थिति है कि बाहर देशों में लोग बात कहने को मजबूर हो जाएं, मगर प्रसन्नता की बात यह है कि लोगों में यह एहसास पैदा हो गया है कि ख़ालिस पढ़ा–लिखा वर्ग भी इसके लिए सामने आने लगा है। इस समय इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि हालात को बेहतर बनाने के लिए और सोच को नियन्त्रित करने के लिए हर वर्ग के लोग सामने आएं। एहसास सबको है लेकिन उस भावना को और अधिक जगाने की आवश्यकता है और उस सोच को एकजुट होने की आवश्यकता है। मानवता के नाम पर और देश के फ़ायदे के लिए जब तक हर वर्ग के और हर समुदाय के लोग सामने नहीं आएंगे हालात में बदलाव बहुत ही मुश्किल है। देश के इस ख़तरनाक रुख़ में बात यह है कि सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी बुद्धिजीवियों पर है, शुद्ध धार्मिक लोगों पर है जिनके अन्दर हालात को समझने की योग्यता भी है और उसको बेहतर बनाने की कार्यप्रणाली भी है।

मुहम्मद (ﷺ) की महफ़िल के आदाब

मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

"ऐ वे लोगो! जो ईमान लाए हो, अल्लाह और उसके रसूल के सामने बढ़ने की कोशिश मत करो और अल्लाह से डरो, अल्लाह तआला सुनता भी है और जानता भी है। ऐ वे लोगो! जो ईमान लाए हो नबी के सामने अपनी आवाज़ को ऊंचा मत करो, उनकी आवाज़ पर अपनी आवाज़ को न बढ़ाओ, जैसा कि तुम आपस में बात करते हो, कहीं ऐसा न हो कि अनजाने में तुम्हारे आमाल ही ख़राब हो जाए। अल्लाह के रसूल के सामने जो लोग अपनी आवाज़ को नीचा रखते हैं, अल्लाह ने उनके दिलों का इम्तिहान ले लिया है, और उनके तक़वे को स्वीकार कर लिया है, उनको अल्लाह की तरफ़ से बड़ी मग़फ़िरत और बहुत सवाब हासिल होगा। जो लोग आपको आपके घरों के पीछे से पुकारते हैं, उनमें से अक्सर बात को समझते नहीं। हालांकि अगर वे थोड़ा सब्र कर लें तो यह बात उन लोगों के लिए बेहतर होगी और अल्लाह तआला मग़फ़िरत करने वाला और रहम करने वाला है।"

(हुजूरातः 1–5)

फ़ाएदा: बेतकल्लुफ़ ज़िन्दगी में आदमी जिस तरह घर में होता है कि बेटा बाप का उस प्रकार सम्मान नहीं कर पाता जैसा कि करना चाहिए। इसलिए कि हर समय का मिलना–जुलना है और हर समय मिलने जुलने में बेतकल्लुफ़ी हो जाती है। इसी तरह सहाबा किराम रज़ि0 को हर समय आप स0अ0 से जो वास्ता पड़ता था तो इसकी संभावना हो गयी थी कि वे इतना सम्मान न कर सकें जितना कि करना चाहिए और उसमें कई बार कुछ लोगों से ग़लती भी हुई। इसलिए कुरआन मजीद में अल्लाह का साफ़–साफ़ हुक्म कि नबी करीम स0अ0 के सामने अपने को न बढ़ाओ, बल्कि उनसे मामला करने, बात करने में अपने को छोटा रखो, ऐसा न हो कि तुम बात करने में अपनी आवाज़ ऊंची करने लगो। इसीलिए उपर्युक्त आयत में इस आदेश के साथ अल्लाह से डरने का आदेश भी दिया गया है ताकि मुसलमानों की यह हरकत अल्लाह की नाराज़गी का कारण न बन जाए। क्योंकि अल्लाह तआला उस बात को पसंद नहीं करता कि उसके रसूल जिसको उसने अपना लिया है और विशेष कर लिया है उनके साथ तुम बराबरी का मामला करो, उनसे बहस करो या उनकी बात में दखल दो।

आयत के दूसरे हिस्से में ईमान वालों को सम्बोधित किया गया है कि जो लोग अपने को ईमान वाला समझते हैं उनके आप स0अ0 के सम्मान का ध्यान करना होगा कि नबी के सामने अपनी आवाज़ों कोा ऊंचा न करें, यानि नबी जिस आवाज़ से बोलते हैं उससे धीमी आवाज़ से बोलें ताकि अन्तर समझ में आए कि तुम नबी से छोटे हो। और इनके सामने इस तरह से बात न करो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे से अपनी बात साबित करने के लिए सख़्त लहजे में बात करते हो। नबी के सामने बहुत अदब से और एहतराम से बात करनी चाहिए इसलिए कि यह ख़तरा है कि तुम्हारे आमाल ख़राब हो जाएं। तुम्हारी नेकियां बर्बाद न हो जाएं, तुम्हारी ये बुराई नेकियों को ख़त्म कर दे, इसलिए कि अगर अल्लाह को बुरा लग गया कि अल्लाह के नबी के साथ तुमने किस तरह की गुस्ताख़ी की है तो अल्लाह तुम्हारे अच्छे आमाल को भी कुबूल नहीं फ़रमाएगा बल्कि तुम्हारे आमाल ख़राब हो जाएंगे और तुमको एहसास भी न होगा। तुम समझ रहे होगे कि हमने बहुत अच्छे–अच्छे काम किए हैं, लेकिन पता चलेगा कि तुम्हारी फ़लां ग़लती से वे सब मिट गए थे।

तीसरी आयत में उन लोगो का उल्लेख है जो आप स0अ0 से बात करने में एहतियात करते हैं यानि हज़रात सहाबा किराम रज़ि0 जो सबसे क़रीब थे। वे इस बात का बहुत लिहाज़ करते थे। कई बार आप स0अ0 इतनी धीरे बात करते थे कि सुनने में दुश्वारी होने लगती थी लेकिन फिर भी हज़रात सहाबा किराम डरते रहते थे। आप स0अ0 की बात को काटते नही थे और आप स0अ0 से ज़्यादा सवाल भी नहीं करते थे। इसलिए कि इसका भी आदेश दिया गया था कि जब नबी कोई बात कहे तो न ज़्यादा सवाल करो और न ज़्यादा पूछो, वे जितनी बात बता दे बस उतने ही पर संतोष करो और उसी से मतलब समझ लो। उसे कुरेदो नहीं। इसीलिए नसीहत के तौर पर अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में बनी इस्राईल के क़िस्सा बताया जिसमें ज़्यादा सवाल करने के नुक़सान को साफ़–साफ़ बताया गया है। बनी इस्राईल से जब गाय की कुर्बानी को कहा गया तो वे पूछने लगे कि गाय कैसी और किस तरह की हो? जिसके आधार पर उन्होंने अपने लिए रास्ता तंग कर दिया। इसीलिए आप स0अ0 ने ज़्यादा सवाल करने से मना किया है। क्योंकि उससे तुम्हें ख़ुद

तंगी हो जाएगी। मानो उससे यह भी बता दिया कि जब अल्लाह तआला ने किसी सिलसिले में एक आम बात का आदेश दिया है तो उससे फ़ायदा उठाया जाए। उसमें नुक़्ते न निकाले जाएं। यही कारण है कि सहाबा किराम रज़ि0 के एहतियात का यह हाल था कि जब उनको आप स0अ0 से कोई चीज़ मालूम करनी होती तो सोचते थे कि किस तरह पूंछे। कहीं गुस्ताख़ी न हो जाए। इसीलिए किसी न किसी देहाती के इन्तिज़ार में रहते कि वह पूछ लेगा और हमे भी सुनने को मिल जाएगा। इसी सूरत में उन देहातियों का भी उल्लेख किया गया है कि देहाती लोग आकर तेज़ तेज़ बात करते हैं यह बहुत बुरा काम करते हैं। वे अपने को नुक़सान पहुंचाते हैं। यद्यपि वे लोग जो अपनी आवाज़ को अल्लाह के रसूल स0अ0 के सामने दबा देते हैं, नीची कर लेते हैं, यह वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह तआला ने तक़्वा के लिए जांच लिया हैं। यानि ये लोग अमल में सही साबित हुए हैं। अल्लाह तआला की जांच में सही उतरे हैं। जिस तरह अल्लाह चाहता है कि उस के रसूल के साथ नर्म जहजे और आहिस्ता से बात की जाए। यह लोग उसका एहतियात करते हैं। इसीलिए फ़रमाया गया है कि ऐसे लोगों के लिए अल्लाह तआला की मगफ़िरत और अज्र–ए–अज़ीम है।

चौथी आयत में उन लोगों का उल्लेख किया गया है जो उनके विपरीत लोग थे। यानि वे देहाती लोग जो गांव, देहात से आते थे। और वे उजड्ड लोग होते थे, जो सभ्यता के नाम पर कोई चीज़ नही जानते थे। बड़े से किस तरह बात करनी चाहिए, बराबर वाले और छोटे से किस तरह बात करनी चाहिए, देहात के लोगों को उनकी कोई समझ नहीं थी। अतः एक बार देहात के कुछ लोग आए, उन्होंने बाहर से मुहम्मद, मुहम्मद पुकारना शुरू कर दिया ताकि वे रसूलुल्लाह स0अ0 को अपनी बात सुना सकें। ये अलग बात है कि उनका यह आवाज़ लगाना किसी ग़लत नियत से नहीं बल्कि केवल अज्ञानता के आधार पर था। लेकिन बेअदबी, बेअदबी ही होती है चाहे बुरी नियत से न हो। इसलिए कुरआन मजीद में फ़रमाया गया कि जो लोग आपको आपके घरों के पीछे से पुकारते हैं, उनमें से अक्सर बात को समझते नहीं, उनमें इतनी समझ नहीं कि किस तरह आप स0अ0 को बुलाना चाहिए। किस तरह आपसे प्रार्थना करनी चाहिए। हालांकि अगर वे थोड़ा सब्र कर लें, इन्तिज़ार कर लें कि जब आप अपने घर से निकलें तब आपसे बात करें। आपको घर के अन्दर से आवाज़ देकर न बुलाएं, क्योंकि न जाने आप किस हाल में हों, किस प्रकार की व्यस्तता में हों?तो यह बात उन लोगों के लिए बेहतर होगी, और अल्लाह तआला मग़फ़िरत करने वाला है और रहम करने वाला है। यानि क्योंकि उन लोगों ने बदनियती से ऐसा नहीं किया इसलिए अल्लाह तआला उनकी इस ग़लती को माफ़ कर दे रहा है। लेकिन उनको मालूम होना चाहिए कि उनका यह काम ग़लत और नुक़सान पहुंचाने वाला है। जबकि शहर के लोग जिनको यह सारी चीज़ें मालूम हैं अल्लाह तआला ने इस आयत के द्वारा उनको भी चेतावनी दे दी कि इस बात का ध्यान रखो। अल्लाह के नबी करीम स0अ0 को मामूली चीज़ न समझो। उनका अल्लाह से ख़ास संबंध है। और उस संबंध की वजह से उनको तुम पर ऐसी बरतरी हासिल होगी कि वह किसी को हासिल नहीं है। यद्यपि वे इन्सान हैं लेकिन अल्लाह ने उनको अपना लिया है। अल्लाह तआला उनकी पूरी सरपरस्ती फ़रमाता है। अल्लाह तआला उनको हिदायत देता है। अल्लाह का फ़रमान हैः "आप जो भी बात कहते हैं अपने दिल से नहीं कहते, बल्कि अल्लाह तआला की तरफ़ से इशारा और रहनुमाई की बुनियाद पर कहते हैं।" (सूरह नज्मः 3–4) मालूम हुआ कि आप के कहने को आप का कहना नहीं समझना चाहिए, बल्कि हक़ीक़त में वह अल्लाह का कहना है।

आप स0अ0 के व्यक्तित्व "शआएर–ए–अल्लाह" (अल्लाह तआला ने जिसको अपना बताया है) में गिना जाता है। इसलिए आप स0अ0 का सम्मान करना, आप स0अ0 की बात पर अमल करना, आपको आदेशों को मानना, आपसे मुहब्बत करना, हम सब पर लाज़मी है। सहाबा किराम रज़ि0 की जीवनियों से पता चलता है कि जब किसी सहाबी से उनके शहीद किए जाने के समय यह पता लगाया जाता कि बताओ तुम्हारी जगह मुहम्मद स0अ0 को शहीद कर दिया जाए तो तुम उस पर राज़ी हो? वे जवाब देते कि आप स0अ0 को कांटा भी चुभे यह गवारा नहीं, इसके बदले उनको शहीद कर दिया जाए। सहाबा किराम रज़ि0 को वाक़ई ऐसी मुहब्बत थी। और इसी मुहब्बत की मांग सारे उम्मतियों से है कि आप स0अ0 से ऐसी मुहब्बत हो जो सिवाए अल्लाह से किसी के न हो, न माता–पिता से, न औलाद से, न माल व जाएदाद से, किसी चीज़ से इतनी मुहब्बत व लगाव न हो जितनी अल्लाह के रसूल स0अ0 से हो, क्योंकि जब मुहब्बत होगी तो इंसान आपके नमूने पर अमल भी करेगा और आप स0अ0 की सुन्नत की पैरवी भी करेगा और आपकी हर चीज़ को अच्छा समझेगा।

अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से मुहब्बत

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

दुनिया में इंसान के किसी से मुहब्बत करने के तीन बड़े कारण होते हैं:

1– एहसान 2– कमाल 3– जमाल

यदि कोई व्यक्ति किसी की ज़ात पर एहसान करता है तो उस व्यक्ति को अपने एहसान करने वाले से उसी स्तर का प्रेम होगा जिस स्तर का उसका एहसान होगा। अगर कोई ग़रीब है और आप उसकी मदद कर दे तो आपसे मुहब्बत करेगा। आप किसी को देखे कि कोई गढ़े में जा रहा था और आप उसको बचा लें तो वह पूरी ज़िन्दगी आपसे मुहब्बत करेगा। मानो कि इस दुनिया में अल्लाह तआला ने ऐसी व्यवस्था रखी है हर व्यक्ति पर दूसरे व्यक्ति का एहसान है। जैसेः मां का एहसान, बाप का एहसान, साथियों का एहसान लेकिन इन सब एहसान करने वालों के एहसान को मानने के साथ इंसान को यह सोचना चाहिए कि सबसे बड़ा एहसान तो अल्लाह का है कि उसने जानवर नहीं बल्कि इंसान बनाया और फिर ईमान वाला बनाया और फिर ईमान वाले में रोज़ा, नमाज़ वाला बनाया और उसके बाद यह भी समझना चाहिए कि अल्लाह के इस एहसान के बाद रसूलुल्लाह स0अ0 का सबसे बड़ा एहसान है जिसने इंसानियत को जहन्नम में जाने से बचाया है।

मुहब्बत की वजह में से दूसरी चीज़ कमाल (विशेषता) है। अगर किसी इंसान के अन्दर कमाल होता है तो लोगो को उससे मुहब्बत हो जाती है। यानि कोई अच्छी तक़रीर करता है, अच्छा पढ़ाता है, अच्छा काम करता है, यहां तक कि आज यह हाल है कि खिलाड़ियों से लोगो को मुहब्बत हो जाती है जिसका कारण यह है कि वे खेल में कमाल हासिल कर लेते हैं। हालांकि उनसे हरगिज़ मुहब्बत नहीं होनी चाहिए, क्योंकि हदीस में आता है कि क़यामत के दिन आदमी का हश्र उसी के साथ होगा, जिससे उसको मुहब्बत होगी, इसलिए इस बात पर हर व्यक्ति को तौबा कर लेनी चाहिए।

तीसरी चीज़ खूबसूरती है, क्योंकि इंसान को हमेशा अच्छी चीज़ से मुहब्बत होती है। जैसेः अच्छा गुलदस्ता, अच्छा फूल, अच्छी गाड़ी इत्यादि। क्योंकि यह इंसान की फितरत है कि ख़ूबसूरत चीज़ की तरह वह अपनेआप आकर्षित हो जाता है। लेकिन सफल व्यक्ति वह है जो दुनिया की बनावटी चीज़ों से प्रभावित न हो बल्कि अल्लाह की मुहब्बत के लिए अपने दिल को ख़ाली कर ले, क्योंकि अल्लाह से बढ़कर ख़ूबसूरत कौन हो सकता है? और सही अर्थों में अक़्लमन्द भी ऐसे ही व्यक्ति को कहा जाएगा जो अल्लाह से मुहब्बत करे, क्योंकि आज दुनिया में हमको हुस्न व जमाल के जितने भी नमूने नज़र आते हैं उन सबको उसी एक ज़ात ने बनाया है। यही कारण है कि अल्लाह के जिन नेक बन्दों को यह सोच नसीब होती है तो वे ख़ुदा की याद में ऐसे मस्त हो गए कि केवल अल्लाह के शब्द ही से उनको आनन्द आता है। यहां तक कि उनकी ऐसी हालत हो जाती थी कि एक बार अल्लाह का नाम लिया गया और दिल धड़कने लगा।

अल्लाह तआला की मुहब्बत के बाद मुहब्बत का पहला हक़ रसूलुल्लाह स0अ0 का है। क्योंकि अल्लाह के रसूल स0अ0 का मामला बहुत ही ऊंचा है इसलिए कि आप स0अ0 अल्लाह के सबसे महबूब हैं। यहां तक कि आप स0अ0 अल्लाह को इतने पसंद है कि आपकी पसंद पर उनकी पसंद है। इसलिए रसूलुल्लाह स0अ0 को भी चाहना ज़रूरी होगा, और यूं भी अगर ग़ौर किया जाए तो मालूम होगा कि रसूलुल्लाह स0अ0 के ही के ज़रिए से हम सबको पूरा दीन, ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा और अमल का दस्तूर मिला। आख़िरत की सही सोच और जन्नत की बहारें मिलीं।

कहने का मतलब यह कि मुहब्बत करने के तीनों कारणों पर विचार करके हमको अपनी अक़्ली मुहब्बत को जगाना चाहिए। हक़ीक़त यह है कि अगर इंसान ऊपर की तीनों वजहों पर ग़ौर करे तो उसके अन्दर अक़्ली मुहब्बत परवान चढ़ती है और फिर अक़्ली मुहब्बत के बाद स्वाभाविक प्रेम की वह चिंगारी जो इंसान के अन्दर दबी हुई है, सामने निकल कर आती है, जिसका फ़ायदा यह होता है कि फिर मुहब्बत की वजह से इंसान का हर अंदाज़ निराला हो जाता है, हर शान निराली हो जाती है। एक एक शब्द मुहब्बत में डूबा हुआ और दिलों को छूता हुआ निकलता है। लेकिन याद रहे कि अगर हमने इन सब बातों को समझने के बाद अल्लाह और उसके रसूल स0अ0 की मुहब्बत के अलावा किसी और की मुहब्बत को तरजीह दी तो अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में इस प्रकार के लोगो के बारे में साफ़ फ़रमा दिया है कि अगर तुमने मेरा रास्ता छोड़ा, और मुरतद हो गए तो अल्लाह ऐसी क़ौम लाएगा जो एक दूसरे को ख़ूब चाहेंगे और अल्लाह से भी बहुत मुहब्बत करने वाले होंगे।

सीरत-ए-नबवी
कुरआन करीम के आइने में

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मानने पर अल्लाह का ख़ास ईनाम

किताब वालों का न मानने पर जितनी सख़्त नकीर की गयी है इसी तरह मानने वालों व ईमान लाने वालों पर दोहरे सवाब का वादा भी किया गया है। वे अपने रसूल पर ईमान ला चुके थे। अब आख़िरी नबी मुहम्मद स0अ0 को भी उन्होंने माना। आप पर ईमान लाए तो उनके लिए दोगुना सवाब है। अल्लाह तआला का इरशाद हैः "ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, उसके रसूलों पर ईमान लाओ, वह तुम्हें अपनी रहमत के दो भारी हिस्से अता फ़रमाएगा और तुम्हारे लिए ऐसी रोशनी फ़राहम करेगा जिसमें तुम चल सकोगे और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला है।"

(सूरह हदीदः 28)

एक दूसरी आयत में जहां एक ओर आसमानी किताबों में आप स0अ0 के आने का उल्लेख वहीं किताब वालो के ईमान लाने पर उनकी सफलता का उल्लेख किया जा रहा है, इरशाद है, "जो इस रसूल की पैरवी करेंगे जो नबी-ए-उम्मी है जिसका उल्लेख वे अपने पास तौरेत व इंजील में लिखा पाते हैं तो उनको भलाई का आदेश देगा और उनको बुराई से रोकेगा और उनके लिए पाक चीज़ें हलाल करेगा और गन्दी चीज़ें उन पर हराम करेगा और उन पर से उनके बोझ को और उन पर लदी हुई बेड़ियों को उतारेगा, बस जो उसको मानेंगे और उसका साथ देंगे और उसकी मदद करेंगे वे उसके नूर की पैरवी करेंगे जो उसके साथ उतरा तो वे ही मुराद को पहुंचेगे।" (आराफ़ः 157)

इस आयत में किताब वालो पर विशेष ईनामों का उल्लेख किया जा रहा है, पिछली शरीअतों में जो बहुत से कठिन आदेश थे आप स0अ0 ने अल्लाह के आदेश से उनको नर्म कर दिया और उनके ऊपर लदा हुआ बोझ उतार दिया, बस किताब वाले यहूदी व ईसाई उनको इस आख़िरी नबी व आख़िरी दीन की क़दर करनी चाहिए और उनको मानना चाहिए कि इसमें उनको दुनिया में भी आसानी और आख़िरत की सफलता का यही एक मात्र रास्ता है।

काफ़िरों व मुनाफ़िक़ो का तरीक़ा

अल्लाह तआला ने काफ़िरों व मुनाफ़िक़ों के बारे में यह फ़रमाया है कि जब उनको अल्लाह और उसके रसूल स0अ0 की इताअत की ओर बुलाया जाता है तो वे बात नहीं मानते और अकड़ते हैं मानों की आप की नाफ़रमानी में कुफ़्र व निफ़ाक़ की पहचान को बताया जा रहा है। इरशाद होता हैः "और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह की नाज़िल की हुई (किताब) की और रसूल की ओर आ जाओ तो आप उन मुनाफ़िक़ो को देखेंगे कि वे आप की ओर (आने में) अटक-अटक कर रह जाते हैं।"

काफ़िरों व मुश्रिकों का उल्लेख करते हुए इरशाद होता हैः "और जब उनसे कहा जाता है कि जो अल्लाह ने उतारा है उसकी तरफ़ और रसूल की तरफ़ आ जाओ तो (वे) कहते हैं कि हमने जिस पर अपने बाप-दादा को पाया वही हमको काफ़ी है चाहे उनके बाप-दादा ऐसे हों कि न कुछ जानते हों न सही राह चलते हों।"

(सूरह माइदाः 104)

दीन की आत्मा अल्लाह के रसूल स0अ0 की पैरवी है। शायर ने ख़ूब कहा हैः

मुहम्मद स०अ० की इताअत दीने हक़ की शर्ते अव्वल है।

इसी में हो अगर ख़ामी तो फिर दीन नामुकम्मल है।।

अल्लाह तआला ने अपने महबूब स0अ0 की पैरवी पर जिस ईनाम का ऐलान किया है वह किसी चीज़ पर नहीं मिल सकता है। यह आप स0अ0 के प्यारे होने की इन्तिहा है कि इरशाद फ़रमा दियाः "आप फ़रमा दीजिए कि अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी राह चलो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करने लगेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बहुत रहम करने वाला है।" (आले इमरानः 31)

इससे बढ़कर महबूब होने की शान और क्या होगी कि आप स0अ0 की पैरवी को अपने महबूबियत की पहचान बता दिया।

तरग़ीब के अध्याय में इससे ज़्यादा और कौन बात हो सकती है। इससे एक ओर रसूलुल्लाह स0अ0 की पैरवी की अत्यधिक महत्व का .... (शेष पेज 9 पर)

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी

मौलाना शम्स तबरेज़

भारत में मुसलमानों के शासन के इतिहास का एक लम्बा अध्याय है। लगभग ग्यारह सौ सालों तक बिना किसी ग़ैर मुस्लिम की संलिप्तता के मुसलमानों ने शासन किया है। साढ़े सात सौ सालों तक यह धरती मुस्लिम शासकों के अधीन रही है। सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक से लेकर बहादुर शाह ज़फ़र तक मुसलमानों ने भारत के भविष्य को संवारा है। धार्मिक पक्षपात व किसी प्रकार के भेदभाव से परे रहकर उन्होंने अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया। कहने को तो वह लोकतन्त्र नहीं था लेकिन आज के लोकतन्त्र से हज़ार गुना बेहतर था। उनके शासनकाल में धार्मिक भेदभाव व हिन्दु–मुस्लिम का कोई झगड़ा नहीं था। जिस प्रकार मस्जिदों को शासन से ग्रांट मिलती थी उसकी प्रकार मन्दिरों की भी शासन से सहायता की जाती थी। हर एक को भारतीय समझा जाता था। हिन्दु व मुसलमान के आधार पर किसी प्रकार का कोई भेद नहीं किया जाता था। कमज़ोरों के अधिकारों का हनन नहीं किया जाता था। अत्याचारियों की सहायता व पीढ़ितों से नज़रे चुराना बहुत बड़ा गुनाह समझा जाता था।

धार्मिक भाईचारे को बढ़ावा देने और शासन मे न्याय से काम लेने वालों में दो नाम सबसे अधिक मशहूर हैं, एक औरंगज़ेब आलमगीर रह0 का और दूसरा मैसूर के शेर टीपू सुल्तान का। लेकिन इत्तिफ़ाक़ है कि इतिहासकारों ने भारत के इन्हीं दो महान शासकों के साथ अन्याय किया। वास्तविकता लिखने के बजाए फ़र्ज़ी और मनगढ़ंत बातों से इतिहास के पन्नों को काला करने की नापाक कोशिश की। उनके जीवन के हसीन कारनामे, आने वाले शासको के लिए मार्ग का प्रकाश साबित होने वाले तरीक़े, जीवन की कायापलट कर देने वाले कथनों को इतिहासकारों ने समय की धुंधली दीवार बना दिया और फ़र्ज़ी बातें उनसे जोड़कर उनकी छवि को दाग़दार बनाने की कोशिश की। देश की नई नस्ल को भारत के एक महान शासक के बारे में ग़लत सूचनाएं देकर धार्मिक उन्माद और साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने की शर्मनाक हरकतें की लेकिन इतिहास को बदलने वालों का यह प्रयास बेकार साबित हुआ।

जिन मन्दिरों को गिराने का आरोप लगाकर औरंगज़ेब आलमगीर और टीपू सुल्तान शहीद की छवि को बिगाड़ने का प्रयास किया गया उन्हीं मन्दिरों ने यह गवाही दी कि यह आरोप ग़लत हैं। हमारे निर्माण भारत के उन्हीं न्यायप्रिय शासकों के प्रयासों का परिणाम हैं उन्होंने हमें गिराया नहीं बल्कि हमारी उन्नति व निर्माण के लिए राहें आसान कीं।

जी हाँ! भारत के महान शासक और भारत पर एक लम्बे अर्से तक सत्ता संभालने वाले औरंगज़ेब आलमगीर रह0 पर पक्षपाती लेखकों ने कम्यूनल, साम्प्रदायिक और हिन्दुओं के साथ भेद–भाव करने और धर्मस्थल को गिराने का आरोप लगाया। इतिहास के पन्नों को इस झूठी कहानी से उसी प्रकार सुसज्जित कर दिया गया कि आने वाली नस्ल ने इसको वास्तविकता मानते हुए औरंगज़ेब को साम्प्रदायिक और हिन्दुओं का दुश्मन स्वीकार कर लिया। देश का एक बड़ा वर्ग इतिहास में लिखे गये इन फ़र्ज़ी अफ़सानों को पढ़कर यह मान बैठा कि वास्तव में औरंगज़ेब अत्याचारी, संकीर्ण मानसिकता वाला, साम्प्रदायिक शासक था।

हक़ीक़त छिप नहीं सकती बनावट के उसूलों से

इसीलिए इतिहास के साथ होने वाले इस अन्याय को एक हिन्दु बुद्धजीवी ने ही उजागर किया और अपनी खोज से उन्होंने साबित किया कि औरंगज़ेब का जो भी इतिहास बयान किया गया है वह बिल्कुल फ़र्ज़ी और मनगढ़ंत है। आइए हम आज आप की मुलाक़ात इस महान व्यक्ति से कराते हैं और इतिहास के सुनहरे पन्नों की एक हल्की सी झलक दिखलाते हैं।

डाक्टर शम्भू नाथ पाण्डेय (1906–1998) एक माहिर लेखक की हैसियत से जाने जाते हैं और अपने समय में उत्तर प्रदेश के एम.एल.ए. और एम.एल.सी. भी रह चुके हैं। उड़ीसा राज्य के गर्वनर रहे हैं। पद्मश्री पुरुस्कार प्राप्त हैं। बहुत सी किताबों के लेखक हैं। महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू के ख़ास साथियों में आपका भी नाम आता है। उन्होंने औरंगज़ेब और टीपू सुल्तान पर लगाए गये ग़लत आरोपों का बचाव करके इन दोनों महान शासको की एक नई तस्वीर पेश की है। उन्होंने इस बारे में काफ़ी पड़ताल की है और उसके बाद "इस्लाम एंड इन्डियन कल्चर" के नाम से एक किताब लिखी है जिसका एक अध्याय है 'हिन्दु मन्दिर और औरंगज़ेब के फ़रमान'

जिसे हाल ही में मौलाना आज़ाद एकेडमी ने प्रकाशित किया है।

अपनी किताब में वे लिखते हैं कि, "एक बार एंग्लो बंगाली कॉलेज इलाहाबाद की इतिहास की किताब का अध्ययन किया, जिसके लेखक डॉक्टर हरी प्रसाद शास्त्री हैं जो कलकत्ता यूनीवर्सिटी में संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष थे। उस किताब में शेर–ए–मैसूर टीपू सुल्तान के संबंध से यह लिखा गया था कि टीपू सुल्तान ने तीन हज़ार ब्राहम्णों को ज़बरदस्ती इस्लाम स्वीकार कराने का प्रयास किया। जिसके कारण से उन सभी ब्राहम्णों ने सामूहिक रूप से आत्महत्या कर ली। ऐसा घिनावना आरोप टीपू सुल्तान के नाम। जिनके कमान्डर इन चीफ़ और प्रधान मंत्री मुसलमान थे। जिनके राज्य के 136 मन्दिरों की सूची आज भी मौजूद है, जिन्हें शाही ख़ज़ाने से वार्षिक सहायता प्राप्त थी।

शास्त्री साहब की लिखी हुई ज़हर से भरी हुई किताब आसाम, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश के हाईस्कूल के शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल थी। डा0 पाण्डेय ने हरी प्रसाद से जब इस घटना का प्रमाण मांगा तो वे निरूत्तर हो गए और कोई प्रमाण प्रस्तुत न कर सके। जिसके बाद आशुतोष चौधरी, वाइस चांसलर, कलकत्ता यूनिवर्सिटी ने इस किताब को कोर्स से निकाल दिया।

टीपू सुल्तान ही की तरह भारत के महान शासक मुग़ल शासन काल के अन्तिम सफल बाहशाह हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर के इतिहास के साथ बहुत अधिक छेड़ख़ानी की गई है। उन पर तरह–तरह के संगीन आरोप लगाए गए हैं। हिन्दुओं के साथ पक्षपात करने का अफ़साना गढ़ा गया है। मन्दिरों को तोड़ने की झूठी कहानियां लिखी गयी हैं। रूढ़िवादी और अत्याचारी मुस्लिम शासक कहा गया है। इन संगीन भ्रान्तियों पर डाक्टर पाण्डेय ने पड़ताल की और औरंगज़ेब की एक नई और वास्तविक तस्वीर भारत के सामने प्रस्तुत की।

डॉक्टर पाण्डेय ने 1948–1953 के दौरान म्यूनिसिपल चेयरमैन इलाहाबाद भी रहे। उन दिनो दो मन्दिरों के पुजारियों के बीच ज़मीन का झगड़ा हुआ जिनमें से एक पुजारी ने प्रमाण के तौर पर शाही आदेशनामा जो औरंगज़ेब के समय में जारी किया गया था, प्रस्तुत किया। डॉक्टर पाण्डेय ने उन शाही आदेशनामों की प्रामाणिकता के लिए सर तेज बहादुर सप्रू को कहा, जो एक क़ानूनविद् थे तथा अरबी व फ़ारसी का ज्ञान रखते थे और वे एक ब्राहम्ण भी थे। सर तेज बहादुर ने शाही आदेशनामे की जांच पूरी की और नतीजा निकाला कि यह औरंगज़ेब की ओर से जारी किया गया शाही फ़रमान है। डॉक्टर पाण्डेय के लिए अब औरंगज़ेब की नई तस्वीर उजागर हुई और उन्होंने भारत के विभिन्न महत्वपूर्ण मन्दिरों के पुजारियों को पत्र लिखा कि औरंगज़ेब की ओर से जारी किए गए शाही फ़रमान या आदेशनामा अगर कहीं मौजूद हो तो उसकी प्रतिलिपी उन्हें भेज दें। जिसके बाद कई हिन्दु मन्दिरों, जैन मन्दिरों, सिक्खों के गुरूद्वारों से औरंगज़ेब के शाही फ़रमानों की प्रतिलिपियां डॉक्टर पाण्डेय को प्राप्त हुईं, जो 1659–1685 के बीच के समय से संबंध रखती थीं। जिनमें यह उल्लेख था शाही ख़ज़ाने से उन सभी मन्दिरों का ख़र्च पूरा किया जाए और उनके उन्नतिकार्यों को बढ़ावा दिया जाए।

सबसे संगीन आरोप जो औरंगज़ेब पर लगाया जाता है वह विश्वनाथ मन्दिर को गिराने से संबंधित है लेकिन उसकी वास्तविकता कुछ इस प्रकार है कि जब औरंगज़ेब अपनी सेना के साथ बंगाल की ओर बनारस के रास्ते से गुज़रे तो उनके साथ के हिन्दु राजाओं की यह इच्छा थी कि वे एक रात के लिए अपनी सेना के साथ पड़ाव डाल लें ताकि उनकी रानियां गंगास्नान करके विश्वनाथ मन्दिर में पूजा कर सकें। इस मांग को औरंगज़ेब ने स्वीकार कर लिया और अपनी सेना को सुरक्षा व्यवस्था के लिए बनारस के चारों ओर पांच किलोमीटर तक फैला दिया। सभी रानियां पालकी में पहुंच कर गंगास्नान की रस्म अदा करने के बाद विश्वनाथ मन्दिर में पूजा करके वापस लौट आयीं, सिवाए कच्छ की रानी के, औरंगज़ेब के अहम कारिन्दे रवाना किए गए ताकि रानी को तलाश किया जा सके, तलाश के दौरान यह वास्तविकता सामने आती है कि मन्दिर में मौजूद गणेश की मूर्ति जो एक हरकत करने वाली दीवार से लगी हुई थी जिसके हटने से ज़मीन के नीचे सीढ़ियां नज़र आयीं जिसमें कच्छ की महारानी अपने ज़ेवरात को खोकर बेइज़्ज़त व परेशान हालत में पायी गयीं।

उस साज़िश में विश्वनाथ मन्दिर के सभी पुजारी शामिल थे। राजाओं के मशवरे पर औरंगज़ेब ने उनकी सज़ा तय की तथा उसके साथ–साथ विश्वनाथ मन्दिर को दोबारा ज़मीन की सतह से बेहतर निर्माण के उद्देश्य से ढ़हाया गया जिसमें उस मूर्ति को स्थापित कर दिया

गया। यह निर्णय इसलिए किया गया ताकि भविष्य में ऐसी साज़िश का किसी को अवसर न मिल सके। ऐसी ही कई वास्तविकताओं का ज़िक्र डॉक्टर शम्भू नाथ पाण्डेय ने अपनी किताब ''इस्लाम एण्ड इण्डियन कल्चर'' में कर चुके हैं।

औरंगज़ेब आलमगीर की ज़िन्दगी की एक ऐसी ही वास्तविकता एक अंग्रेज़ छात्रा के द्वारा हाल ही के दिनों में लोगों के सामने आयी। दिल्ली यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर शरीफ़ुल हसन क़ासमी के अनुसार एक–एक अंग्रेज़ छात्राओं ने उन्हें मुस्लिम शासन काल में मन्दिरों के लिए जारी किए गए आदेशों की कुछ नक़लें अनुवाद के लिए दीं। वे सभी आदेश फ़ारसी में थे सिवाए कुछ के जो हिन्दी व संस्कृत में थे। अनुवाद के बाद आदेशों की संख्या तीन सौ के क़रीब हुई जो सभी हरियाणा की मन्दिरों के नाम जारी किए गए थे। जाएदाद और सम्पत्तियों का उल्लेख था।

निष्कर्ष यह कि औरंगज़ेब का इतिहास न्याय व धार्मिक सहिष्णुता से भरा पड़ा है। औरगंज़ेब आलमगीर रह0 का शासनकाल हर प्रकार से सफल रहा है। उनका 49 साल का शासनकाल भारत के इतिहास का चमकता हुआ अध्याय है लेकिन इन सब के बावजूद उन पर झूठा आरोप लगाया गया है। उनका ग़लत इतिहास बयान किया गया है जिसका आधारभूत कारण यह है कि धार्मिक व्यक्ति थे। जिस प्रकार राजनीति में ईमान दार व कर्तव्य परायण थे उसी प्रकार शरीअत में भी वे कर्तव्य परायण थे। शरीअत के आदेशों पर अमल करना उनके जीवन का महत्वपूर्ण कार्य था। वे दिन में सत्ता संभालते थे और रात के अंधेरे में परवरदिगार की बारगाह में सजदे में रहते थे। ज्ञानियों का सम्मान करते थे और शिक्षा व प्रशिक्षण में उन्नति चाहते थे। दूसरे शासकों की भांति वे शराब व शबाब की महफ़िलें नहीं आयोजित करते थे। अय्याशी और बेजा ख़र्च से दूर रहते थे। ख़ुशामद करने वालों व चापलूसों के लिए उनके यहां कोई जगह न थी। यही चीज़ें कुछ लोगों को नहीं भाती है और उन पर आरोप लगाया जाता है।

इस वास्तविकता का एक स्पष्ट उदाहरण यह है कि लाल क़िले में रात को आठ बजे प्रस्तुत किया जाने वाला वह प्रोग्राम है जिसमें मुग़ल शासन काल से लेकर भारतीयों की स्वतन्त्रता तक का इतिहास प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रोग्राम में औरंगज़ेब की सभी ख़ूबियों को बयान करने के बाद उनकी कमी यह कहकर तलाश की जाती है कि वह नीरस स्वभाव का था। शराब व शबाब की महफ़िलें लगाने से दूर रहता था और इसके सुबूत में वह दृश्य दिखाया जाता है कि औरंगज़ेब जब मोती मस्जिद में नमाज़ के लिए आते हैं तो मस्जिद से उन्हें म्यूज़िक और गाने की आवाज़ सुनायी देती है, जिस पर वे सख़्त नकीर करते हुए, ''ला हउला वला कूव्वता इल्ला बिल्लाह'' को पढ़ते हैं और कहते हैं, ''मेरे कानों में यह क्या आवाज़ आ रही है ख़ुदारा इसे बन्द करो।''

संक्षेप में यह कि भारत का इतिहास मुस्लिम शासकों के बिना अपूर्ण व अपंग है। उनका नाम व निशान मिटाना, उनके इतिहास में बदलाव करना, उनके नाम से सड़कों व संस्थाओं को न जोड़ना भारत के इतिहास के साथ नाइंसाफ़ी और अन्याय है। देश की बदनामी है। लेकिन हमे शासन के इस भेद से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता क्योंकि पत्थरों पर लिखे हुए नामों को मिटाकर उनकी महानता व अद्वितीय शासन का नायाब इतिहास भुलाया नहीं जा सकता है।

यूनान व मिस्र व रोमा सब मिट गए जहां से।
अब तक मगर है बाक़ी नाम व निशां हमारा।।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौर–ए–जहां हमारा।।

शेष : सीरत–ए–नबवी – कुरआन करीम .....

..... अन्दाज़ा होता है तो दूसरी ओर आप स0अ0 के बहुत ज़्यादा महबूब होने का। अब यह बात ज़ाहिर है कि यह पैरवी जितनी ज़्यादा पूरी होगी अल्लाह की तरफ़ से उसी एतबार से महबूबियत मिलेगी। आप स0अ0 ने कुरआन मजीद की जो तफ़सीर फ़रमायी, दीन की जो तशरीह फ़रमायी और अपनी कथनी व करनी से उम्मत के लिए इसको खोल दिया और इसके एक एक हिस्से पर अमल करना उम्मत की ज़िम्मेदारी है। यहां तक कि जो आदमी आप स0अ0 की चाल–ढ़ाल, आपकी आदत व तरीक़े का भी शैदाई होगा, आप स0अ0 की एक एक अदा को अपनाएगा, वह अल्लाह का इतना अधिक महबूब बनता चला जाएगा कि अल्लाह तआला उसके पिछले गुनाहों को बख़्श देंगे और अगर कभी भूल–चूक हुई तो माफ़ कर देंगे, मगर शर्त यही है कि पैरवी पूरी हो।

सेना के प्रशिक्षण में आप स0अ0 का प्रभाव

उस्ताज़ अब्दुर्रहमान अज़्ज़ाम

रसूलुल्लाह स0अ0 ने मदीना पहुंचने के छः माह बाद फ़ौज की बाग़डोर का एक झन्डा हज़रत उबैदा बिन अलहारिस बिन मुत्तलिब रज़ि0 को अता किया इसके बाद लगातार युद्धों व जंगों का सिलसिला शुरू हो गया। बदर से पहले के सराया में बज़ाहिर हर कुरैश को निशाना नहीं बनाया गया लेकिन इसका राजनीतिक लाभ हुआ जो हिकमत से दृढ़ता के लिये आवश्यक था। उन्होंने मुहाजिरीन के हौसले बढ़ा दिये और यसरब के बुख़ार से निजात देकर उनमें चुस्ती पैदा कर दी और मुसलमानों को एक दृढ़ नेतृत्व के अधीन एक समान कार्य का आदी बना दिया जिसमें हसब व नसब और क़बाइली भेदभाव का कोई दख़ल नहीं था और वो लगातार फ़ौजी कार्यवाहियां निर्णायक जंग के लिये लगातार प्रशिक्षण और ट्रेनिंग का हिस्सा थी।

मदीना ने इन फ़ौजी कार्यवाहियों से जान लिया कि रसूलुल्लाह स0अ0 ताक़त का मुक़ाबला ताक़त से करना चाहते हैं और अरबों ने भी महसूस कर लिया कि कुरैश से मुक़ाबला करने वाले आदमी से छेड़–छाड़ नहीं की जा सकती वरना अगर वो आप स0अ0 में कमज़ोरी पाते तो वो मदीने पर हमला कर देते और वहां लूट–मार को अपने गर्व व औरतों के लिये गीत गाने का साधन बना लेते।

इसी प्रकार कुरैश को भी इस बात का एहसास हो गया कि रसूलुल्लाह स0अ0 और सहाबा जिन्हें उन्होंने बग़ैर हक़ और खुदा परस्ती के जुर्म में निकाला था, मदीना में जाकर उनके आर्थिक जीवन के लिये ख़तरा बन गये हैं जबकि दीनी जीवन के लिये इतने ख़तरनाक नहीं हैं।

उन्होंने समझ लिया कि जिस तरह उन्होंने उनकी आस्था में हस्तक्षेप किया था उसी प्रकार वो उनकी प्यारी चीज़ व्यापार में हस्तक्षेप कर रहे हैं और अगर वो व्यापारिक स्वतन्त्रता चाहते हैं तो उन्हें अक़ीदे की आज़ादी को स्वीकार करना होगा और ये चीज़ आप स0अ0 को हुदैबिया की संधि में व बदर व उहद में और एहज़ाब की खूनी जंगो के बाद प्राप्त हुई।

वो सेना का प्रशिक्षण दो साल तक जारी रहा फिर जब रसूलुल्लाह स0अ0 ने अन्दाज़ा कर लिया कि उनके सहाबा में ऐसी ताक़त आ गयी है जो किसी जंग के बाद अरबों में उनका स्थान श्रेष्ठ कर सकती है तो आप स0अ0 ने इसमें देर नहीं कि और बदर में पहुंच कर कुरैश का इन्तिज़ार करने लगे जो साज़ोसामान और व्यक्तिबल के साथ उनका सामना करने आये उसके एक हज़ार जवान उस समय के असलहों से लैस थे और उनके साथ सौ घुड़सवार और सात सौ ऊंट थे।

दूसरी ओर आप स0अ0 के साथ 314 पैदल लोग थे (मशहूर रिवायत 313 की है) और उनके पास केवल तलवारें थीं और तीन घोड़े और क़रीब सत्तर ऊंट थे इस अवसर पर आप स0अ0 ने सहाबा की जंगी तैयारी का अनुभव करने के लिये उनकी राय पूछी, मुहाजिरीन तो बहुत खुलकर बोले यहां तक कि मिक़दाद बिन उमर रज़ि0 ने कहा कि "या रसूलुल्लाह! आप ज़रूर चलें" (बखुदा जिसने आप स0अ0 को हक़ के साथ भेजा है) अगर आप स0अ0 हमें यमन तक भी ले चलेंगे तो हम चलेंगे और वहां तक लड़ते चलेंगे। रसूलुल्लाह स0अ0 ने उनका शुक्रिया अदा किया फिर अन्सार की ओर रुख़ करके फ़रमाया आप लोग भी राय दें (ये इसलिये था कि आन्तरिक रूप से मदद की बैत की थी, इसलिये आप स0अ0 को संभावना थी कि वो बाहरी दुश्मन से लड़ने से इनकार न कर दें) इस पर साद बिन मआज़ रज़ि0 कहने लगे कि या रसूलुल्लाह! शायद आप स0अ0 का रोये सुख़न हमारी ओर है? आप स0अ0 ने फ़रमाया हां ऐसा ही है। तो साद रज़ि0 कहने लगे कि हम आप स0अ0 पर ईमान लाये और आप स0अ0 की तस्दीक़ की और गवाही दी कि आप स0अ0 जो लाये हैं वो सच है और हमने इताअत का इक़रार किया तो अब आप स0अ0 का जो इरादा है उस पर अमल कीजिये हम आप स0अ0 के साथ हैं। खुदा की क़सम जिसने आप स0अ0 को हक़ के साथ भेजा है अगर आप स0अ0 हुक्म देंगे तो हम इस समन्द्र में आप स0अ0 के साथ घुस जायेंगे और हममे से कोई पीछे न रहेगा। हमें तो ये भी नापसंद है कि दुश्मन से हमारा सामना आज के बजाये कल हो, हम जंग में साबित क़दम रहने वाले लोग हैं, शायद अल्लाह आप स0अ0 को हमारे ऐसे काम दिखाये जिनसे आप स0अ0 की आंखे ठन्डी हों। तो अल्लाह का नाम लेकर हमें ले चलिये।

हज़रत साद रज़ि0 कहते हैं कि रसूलुल्लाह स0अ0

ये सुन कर खुश हुए और फ़रमाया कि चलो और खुशख़बरी लो इसलिये कि अल्लाह ने मुझसे दो जमाअतों में से एक का वादा किया है। बखुदा! मैं उस क़ौम के गिरने की जगह देख रहा हूं बदर से पहले सेना में ये आत्मा काम कर रही थी जिसकी तरजुमानी मुहाजिरीन व अन्सार ने की। वो पाक नफ़्स मानो ईमान के सांचे में ढले थे और इताअत व प्रशिक्षण ने उस पर चमक कर दी थी और शासक की समझदारी राय लेने से प्रकट हुई। वो बार–बार लोगों से कह रहे थे कि लोगों! मुझे सलाह दो हालांकि वो जानते थे कि अगर वो उन्हें लेकर समन्दर में कूद पड़ें या रेगिस्तान में दाख़िल हो जायें तब भी वो उनका विरोध नहीं करेंगे। मगर शराफ़त और वफ़ादारी की मांग थी कि वो अन्सार की राय भी उस जंग के लिये ज्ञात कर लें जिसके लिये उन्होंने अभी तक बैत नहीं की थी।

फिर जब युद्ध हुआ तो लोगों व सामान की कमी, अधिकता पर हावी हो गयी जबकि दोनों पक्ष अरब और बहादुर थे मगर जैश–ए–मुहम्मदी का पल्ला दो बातों से भारी रहा। एक युद्धप्रणाली दूसरे मौत का डर न होना। लोगों ने बदर में इस युद्धप्रणाली का चमत्कार उस समय देखा जब मुश्रिकीन के घोड़ो ने सफ़ों पर हमला किया मगर वो उन्हें एक क़दम भी पीछे न हटा सके और हैरान होकर वापस हुए कि उन्होंने कुछ ऐसा देखा सुना भी न था उन्होंने तो ये सुन रखा था कि जब घोड़े हमला करते हैं तो युद्धक्षेत्र के अनुभवियों के अनुसार बड़ी दहशत होती है, और पैदल फ़ौज के लोग उनके आगे बहुत कम टिक पाते हैं। बदर में लोगों ने देखा कि तीन सौ लोग जिन्हें रसूलुल्लाह स0अ0 ने प्रशिक्षण दिया था और व्यवस्थित किया था वो अल्लाह के रास्ते में दुनिया से जिहाद के लिये निकलते हैं तो ज़मीन उनके लिये खोल दी जाती है। बदर की जंग से लोगों ने युद्धप्रणाली और मौत से बेख़ौफ़ी का मूल्य समझा। इसी प्रकार उन्होंने बाद में ख़न्दक़ के युद्ध में देखा कि ज़िन्दगी से ज़्यादा हक़ को चाहने वालों ने किस तरह अपने शहर से क़बीलों की एक बड़ी भीड़ को वापसी पर मजबूर कर दिया और ये देखा गया कि कार्यप्रणाली किसी प्रकार संख्या और साज़ोसामान पर हावी होती है।

ख़न्दक़ या एहज़ाब के युद्ध में निफ़ाक़ ज़ाहिर हुआ और यहूदियों ने रसूलुल्लाह स0अ0 का वादा तोड़ दिया और उधर दुश्मन मदीने के नीचे और ऊपर आ पहुंचा और मुसलमानों पर बड़ी मुश्किल आ गयी। लेकिन व्यवस्थित सेना के मुहम्मदी प्रशिक्षण और स्थिति पर नियन्त्रण करने वाले नेतृत्व और सद्बुद्धि, उपाय करने की क्षमता और सब्र व बहादुरी ने क़बीलों को रातों रात मदीने से भागने पर मजबूर कर दिया। घबराहट में मक्की फ़ौज का सरदार ऊंटनी पर सवार हो जाता है और वो रस्सी न खुलने के कारण तीन पांव पर चलती नज़र आती है।

मुहम्मद स0अ0 के इसी माहिर नेतृत्व ने उहद में मदीना को बचाया था कि अभी सेना सदमे से बाहर ही नहीं हुई थी कि उसे हरकत और दूसरी सेना का पीछा करने का आदेश दे दिया और अगर युद्धप्रणाली व इताअत की सरअत न होती तो कुरैश मदीने पर हल्ला बोलकर मुसलमानों की बची हुई सेना का ख़ात्मा कर देते। प्रशिक्षित सेना के माहिर नेतृत्व ने कुरैश को पराजय पर मजबूर कर दिया और कल के पराजित विजय की ओर अग्रसर होने लगे। ये तो कुछ छोटे–छोटे उदाहरण थे जिनकी व्याख्या आपको कतब–ए–तारीख़ में मिलेगी और रसूलुल्लाह स0अ0 के शासन व नेतृत्व और राजनीति कौशल और न्याय प्रिय लोगों को आप की श्रेष्ठ ज़ात की व्यापकता ज्ञात हो सकेगी। ये अजीब बात है कि वो सेना के प्रशिक्षण, युद्ध के वाक़्ये और मशवरा व उपाय जिसकी ओर हमने इशारा किया उसने मुहम्मदी शासन स्थापित किया जो मानव इतिहास के एक महान साम्राज्य का आधार बनी किन्तु वो शासन उद्देश्य नहीं था हम ऐतिहासिक सत्यता और अपने बहस के नतीजे के साथ नाइन्साफ़ी करेंगे अगर हम लोगों को शासन को रसूलुल्लाह स0अ0 का अस्ल उद्देश्य समझने की ग़लतफ़हमी में पड़ा रहने दें। जबकि अस्लियत ये है कि शासन तो समय की मांग थी और उस अस्ल मक़सद की सीढ़ी थी कि शिर्क का ख़ात्मा हो और तौहीद बुतपरस्ती की जगह ले। जब मक्का ने मुसलमानों पर जुल्म व ज़्यादती की हद कर दी और इस्लामी अक़ीदे का जीवन और स्वतन्त्रता और दावत की संभावनाएं प्राप्त करने का पैग़म्बरी प्रयास असफल रहा तो आप स0अ0 ने ताक़त का सामना ताक़त से करने का फ़ैसला और धर्म की स्वतन्त्रता की मांग की जिसके बारे में कुरआन में है कि:

(शेष पेज 18 पर)

फ़िलिस्तीन की समस्या के हल के बिना शांति असंभव

प्रोफ़ेसर ए. के. महापात्रा

फ़िलिस्तीनी धरती में आज जो विस्फोटक स्थिति पैदा हो रही है वह इस्राईल के फ़िलिस्तीन वासियों को उनके मूलभूत अधिकारों से वंचित करने के कारण हो रही है। फ़िलिस्तीनी स्वतन्त्रता संग्राम को नए सिरे से आरम्भ कर रहे हैं जबकि इस्राईल उसको आतंकवाद का नाम दे रहा है। किन्तु वास्तविकता यह है कि हिंसा और टकराव की यह स्थिति स्वतन्त्रता संग्राम है। यदि अन्तर्राष्ट्रीय ताक़तों ने इस समस्या को हल करने का प्रयास नहीं किया तो पश्चिमी एशिया में शांति की स्थापना संभव नहीं है। अमरीका या दूसरी ताक़तों को पश्चिमी एशिया के इस सबसे बड़े संकट को हल करना ही होगा।

पिछले कई हफ़्तों से उस फ़िलिस्तीनी–इस्राईली की धरती पर जो भयंकर स्थिति पैदा हुई है वह मुसलमानों के बहुत ही महत्वपूर्ण और पवित्र क्षेत्र को क़ब्ज़ा कर लेने वाले इस्राईल से स्वतन्त्र कराने का एक प्रयास है। जबकि फिलहाल कहीं–कहीं हिंसक घटनाएं हो रही हैं, किन्तु यह क्रम एक सम्पूर्ण लहर का रूप नहीं लेगा इसके बारे में कुछ भी गारंटी से नहीं कहा जा सकता है।

पिछले साठ सालों के समय में इस प्रकार के बहुत से प्रयास हुए हैं और इस्राईल उन मुहिम को बेअसर और असफल बनाने में सफल रहा है। इस समस्या को हल करने के लिए ओसलो संधि के तहत बहुत प्रयास किया गया था किन्तु उसका कोई लाभ फ़िलिस्तीन को नहीं हुआ। समझौते के तहत पश्चिमी किनारे और ग़ज़्ज़ा में फ़िलिस्तीनी अथारटी को कन्ट्रोल मिला किन्तु उनको इक़्तिदार आला नहीं मिला यानि फ़िलिस्तीन को उन दो क्षेत्रों की व्यवस्था चलाने का अधिकार तो मिला किन्तु अन्तराष्ट्रीय समस्याओं की रक्षा कार्यकारिणी इत्यादि पर इस्राईली शासन का नियन्त्रण है तथा इसके अलावा ग़ज़्ज़ा और पश्चिमी किनारे अलग ज़मीन के टुकड़े हैं जिनमें फ़िलिस्तीन की दो अलग–अलग पार्टियां हमास और अलफ़तह का नियन्त्रण है। वास्तविकता यह है कि इस्राईल एक ताक़तवर दुश्मन है और फ़िलिस्तीन की दोनों पार्टियां अपने–अपने तरीक़े से इस्राईल से लड़ रही हैं। अलफ़तह गांधीवादी तरीक़े से प्रयास कर रही है और उसने ओसलो संधि के बाद अपनी कार्य प्रणाली बदल दी है। उसने हिंसा या युद्ध के रास्ते को छोड़कर स्वतन्त्रता प्राप्ति का गांधीवादी तरीक़ा अपनाया है जबकि दूसरी ओर हमास है जिसको आम तौर पर इस्लाम पसंद जमाअत कहा जाता है जो कि इस्राईल के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करती है। उसका कहना है कि इस्राईल को समाप्त किए बग़ैर फ़िलिस्तीनी राज्य की स्थापना संभव नहीं है। अस्ल में इस्राईल–अरब विवाद को साम्प्रदायिक दृष्टिकोण या हिंसात्मक या संतुलन के दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता नहीं है। यह विवाद मानवता के दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए। इस झगड़े को बहरहाल हल किया जाना चाहिए और यह समस्या जब तक रहेगी पश्चिमी एशिया में शांति स्थापना की संभावना नही है।

पश्चिमी एशिया में इस समय धमाकाखेज़ स्थिति है। क्षेत्र में शक्ति का संतुलन अस्थिर है। अमरीका की वर्तमान पोज़ीशन वह नहीं है जो पहले थी। रूस का महत्व काफ़ी बढ़ गया है। क्षेत्र में कट्टरवाद का प्रभाव व रसूख लगातार बढ़ रहा है। बैतुलमक़्दस का महत्व इस्लामी दुनिया में बहुत है। यह मुसलमानों की भावनाओं से जुड़ा हुआ मसला है। इस आधार पर बहुत से देशों में लोकतान्त्रिक आन्दोलन सफल नहीं हो रहे हैं और उन लोकतान्त्रिक आन्दोलनों का लाभ उन जमाअतों को हो रहा है जो इस विवाद को हवा देकर सत्ता पर क़ाबिज़ होना चाहती हैं। अतः यह समय की मांग है कि इस समस्या के समाधान का प्रयास किया जाए।

इस समय ऐसा लग रहा है कि अधिकृत क्षेत्र में तीसरा मोर्चा तेज़ हो जाएगा। यह मोर्चा इससे पहले कि इस्राईल विरोधी हिंसात्मक बेचैनी से बिल्कुल भिन्न है। इस पर पश्चिमी एशिया की लोकतान्त्रिक शक्तियों का प्रभाव है। यह ज़माना सोशल मीडिया और इन्फ़ारमेशन टेक्नालॉजी का है। मीडिया ज़्यादा सरगर्म है। हर चीज़ एकदम से अन्तर्राष्ट्रीय प्लेटफ़ार्म पर उभर कर सामने आ जाती है। पहले के दो मोर्चे इस प्रकार के नहीं थे। उस समय इन्फ़ारमेशन के वे साधन नहीं थे जो आज हैं। अतः इस बार अगर मोर्चा बनता है तो उसकी गूंज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महसूस की जाएगी।

सफ़ों को ठीक करना नमाज़ के कमाल की निशानी

मस्जिद में जमाअत से नमाज़ अदा करना एक बड़ी नेकी भी है और इस्लाम के अहम तरीन वाजिबात में से एक वाजिब भी। किसी शरई ग़रज़ के बग़ैर मस्जिद न जाना और जमाअत से नमाज़ न अदा करना बड़ी महरूमी ही नहीं बल्कि कबीरा गुनाह भी है। सहाबा किराम के ज़माने में जमाअत की नमाज़ से ग़ैर हाज़िरी को मुनाफ़क़त समझा जाता था, चुनान्चे सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि0) से रिवायत हैः

"हम तो ये देखते थे कि जमाअत से कोई ग़ैर हाज़िर न होता सिवाये मुनाफ़िक़ के जिसका निफ़ाक़ खुल्लम खुल्ला था और हम ये भी देखते थे कि कई (कमज़ोर) आदमी को दो आदमी सहारा देकर लाते और उसको सफ़ में खड़ा कर देते और तुममे से कोई नहीं है जिसकी मस्जिद उसके घर में न हो लेकिन अगर तुम घरों में नमाज़ पढ़ोगे और मस्जिदों को छोड़ दोगे तो तुम अपने नबी के तरीक़े को छोड़ दोगे और अगर तुम अपने नबी (स0अ0) के तरीक़े को छोड़ दोगे तो काफ़िर हो जाओगे।"

(अबू दाऊदः 550)

मस्जिद में जाने और जमाअत से नमाज़ पढ़ने के लिये मुस्तक़िल आदाब हैं जो फ़िक़ की किताबों में मौजूद हैं और जिन्हें हदीसों से लिया गया है। इन आदाब में एक अहम अदब ये है कि पहले अगली सफ़ों को भरा जाये फिर बाद वाली सफ़ में खड़े होकर सफ़ बन्दी की जाये। अगर कोई नमाज़ी देर से मस्जिद में पहुंचे कि जमाअत खड़ी हो चुकी है तो उसे चाहिये कि जहां तक सफ़बन्दी हो चुकी है उसकी बाद वाली ख़ाली जगह पर खड़ा हो जाये और अपनी नमाज़ शुरू करे। सफ़ों में इस बात का ख़्याल रखा जाये कि दो नमाज़ियों के बीच कोई जगह ख़ाली न हो, एक दूसरे के कांधे मिले हों, पैर से पैर को मिलाना, कंधे से कंधे को मिलाना और एक दूसरे के साथ मिलकर खड़ा होना सफ़बन्दी और जमाअत के आदाब में से है। एक दूसरे से अलग या दूर रहकर या बीच में कुछ फ़ासला छोड़कर खड़ा होना न सिर्फ़ आदाब के ख़िलाफ़ है बल्कि इस बारे में सख़्त वईद आयी हैं। सफ़ों की दुरूस्तगी, सफ़ों का बिल्कुल सीधा होना और मिल जुल कर खड़ा होना नमाज़ के कमाल और तकमील (पूरा होने) की निशानी है। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः

"अपनी सफ़ें दुरुस्त और सीधी रखो क्योंकि सफ़ों की दुरुस्तगी और उनका सीधा होना नमाज़ के मुकम्मल और सही होने में से है।"

(सही बुख़ारीः 723, सही मुस्लिमः 433, सुनन अबी दाऊदः 667, सुनन इब्ने माजाः 993)

सफ़ों में नमाज़ियों के दरमियान अगर ख़ाली जगह रह जायेगी और कोई नमाज़ी उसे भरेगा नही तो शैतान उस सफ़ में आ घुसेगा जैसा कि हदीसों में हैः

"जब नमाज़ी सफ़ों में ख़ाली जगह छोड़ेगें और एक दूसरे के साथ मिल जुल कर खड़े न होंगे तो उनके दिलों को भी एक दूसरे से दूर कर दिया जायेगा।

(मुसनद इमाम अहमदः 262/5, अबू दाऊदः 667)

मानो की सफ़ों में एक दूसरे के साथ मिल कर खड़े होने में अल्लाह तआला उन नमाज़ियों के दिलों को भी एक दूसरे से मिला देता है। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमायाः

"तुम लोग ज़रूर अपनी सफ़ों को बराबर या सीधी करो या फिर अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों में एक दूसरे की मुख़ालफ़त (विरोध) डाल देगा।"

(बुख़ारीः 717, मुस्लिमः 436, अबूदाऊदः 663)

इमामुन्नववी ने फ़रमाया कि सफ़ों की सफ़बन्दी और जमाअत से नमाज़ की अदायगी में मुसलमान जितनी मुहब्बत व एकराम से एक दूसरे के साथ मिलकर खड़े होंगे और बीच में ख़ाली जगह न छोड़ेगें, उतना ही अल्लाह तआला भी उनके दिलों को जोड़कर रखेंगे और अगर सफ़ें सही न होंगी, बीच में जगह ख़ाली छोड़ दी जायेगी तो लोगों के बीच दुश्मनी, मुख़ालफ़त, नफ़रत और

आपस के झगड़े आम कर दिये जायेंगे।

(शरह मुस्लिम अलनववी : 220/1)

रसूल–ए–करीम (स0अ0) के बारे में सैय्यदना अलबरा बिन आज़िब (रज़ि0) फ़रमाते हैं:

"रसूल–ए–करीम (स0अ0) ख़ुद तश्रीफ़ लाते और सफ़ों को ठीक फ़रमाते, नमाज़ियों के सीनों और कांधों को सीधा करते (यानि एक–दूसरे के साथ मिलाते और सीधा व बराबर करते) और फ़रमाया करते थे एक दूसरे से दूर न हो वरना तुम्हारे दिल एक–दूसरे से दूर हो जायेंगे। जो नमाज़ी अपनी सफ़ें दुरूस्त रखते हैं, सफ़ें बिल्कुल सीधी रखते हैं, एक दूसरे के साथ मिलकर सफ़ें बनाते हैं, सफ़ों में अगर ख़ाली जगह नज़र आ जाये तो उसे भर देते हैं, उनके लिये बशारतों, दुआओं और अज्र व सवाब वाली बहुत सी हदीसें मौजूद हैं।"

(सही इब्ने ख़ुज़ैमाः 26/3, अबूदाऊदः 664, मुसनद अहमदः 285/4)

मस्जिद के इमाम व ख़तीब (ख़ुत्बा देने वाल) और मस्जिद के ज़िम्मेदारों की ज़िम्मेदारी है कि इक़ामत (जमाअत के खड़े होने से पहले दी जाने वाली अज़ान) से पहले या इक़ामत के बाद नमाज़ शुरू होने से पहले सफ़ों को ठीक करायें, नमाज़ियों को एक दूसरे के साथ मिलकर खड़े होने की ताकीद करें और बीच में ख़ाली जगह न रहने दें और सफ़ों को ठीक करें।

नमाज़ियों को इस बात की तलक़ीन भी कर दी जाये कि अगर ग़लती से किसी सफ़ में या नमाज़ियों के बीच कोई जगह ख़ाली रह गयी तो नमाज़ पढ़ने के दौरान भी नमाज़ी अपनी जगह से हरकत कर सकता है और अपने दायें–बायें ख़ाली जगह भर सकता है। अगर नमाज़ के दौरान कोई दूसरा शख़्स भी आपको दायें–बायें खिसकाये ताकि ख़ाली जगह भर जाये तो आप उसके साथ सहयोग कीजिये और नमाज़ के दौरान दायें–बायें होकर ख़ाली जगह भर दीजिये। इसी तरह अगर बीच में जगह ख़ाली है और बाद में आने वाला नमाज़ी यहां खड़े होकर नमाज़ में शामिल होना चाहे तो पहले से नमाज़ पढ़ने वाले नमाज़ी को चाहिये कि वो उसके साथ सहयोग करते हुए उसको अपने साथ खड़ा होने दे। हमारे यहां एक बड़ी कमज़ोरी ये है कि नमाज़ी नमाज़ के दौरान अपनी जगह से हिलने को ग़लती व गुनाह समझता है जबकि शरीअत में ऐसा नहीं है। आप नमाज़ के दौरान जायज़ हद तक हरकत कर सकते हैं। जिस किसी ने सफ़ों में ख़ाली जगह देखकर उसे भर दिया उसके लिये पांच अहम और अज़ीमुश्शान बशारतें हैं।

"जिस किसी ने सफ़ को मिलाया अल्लाह तआला उसे मिलाये यानि ख़ैर व बरकत दे और उसके सारे काम कर दे।"

(अबू दाऊदः 666, इब्ने ख़ुज़ैमाः 23/3, नसईः 93/2)

"किसी भी नेकी के लिये चल कर जाने में वो अज्र व सवाब नहीं है जो सफ़ों में ख़ाली जगह देखकर चल कर जाते हुए उसे भर देने और पुर कर देने में है।"

(मुसनद मुज़मारः 512, इब्ने हब्बानः 694, मुजम्मअ ज़वाएदः 90/2)

"जो सफ़ की ख़ाली जगह भर देता है, अल्लाह तआला उसके दर्जे बुलन्द कर देते हैं और उसके लिये जन्नत में घर बना देते हैं।"

(मुजम्मअ ज़वाएदः 91/2)

"जो सफ़ की ख़ाली जगह भर देता है उसके गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं।"

(मुसनद–ए–बज़ारः 511, मुजम्मअ ज़वाएदः 91/2)

"उस शख़्स का चलना अल्लाह तआला को सबसे पसंद है जिसने सफ़ की ख़ाली जगह देखी और चल कर उसे भर दिया।"

(मुसतदरक हाकिमः 272/1)

बशारत व अज़ीम अज्र व सवाब वाली इन हदीसों से हमें सबक़ और दर्स लेना चाहिये कि हम अपनी मस्जिदों की जमाअतों में सफ़ों को ठीक करने की ओर ध्यान दें क्योंकि समाज में सामूहिक सुधार और मुसलमानों का आपस में मिल–जुल कर व मुहब्बत से रहना इन्हीं सफ़ों की दुरुस्ती और सुधार पर आधारित है। अगर मस्जिदों में सफ़ों के बीच फ़ासला रहेगा तो लोगों के दिल भी एक–दूसरे से दूर कर दिये जायेंगे जैसा कि हमारे समाज में ये अज़ाब हम पर हमारी ही कमज़ोरियों और नाफ़रमानियों के कारण से मुसल्लत है। लिहाज़ा आइये कि हम सब मिलजुल कर एक दूसरे का सम्मान करें और अपने दिलों को साफ़ करें, नमाज़ के दौरान मिलजुल कर एक दूसरे के साथ खड़े हों ताकि अल्लाह तआला हम पर रहम फ़रमाये और हम सब के दिलों को जोड़ दे।

जन्नत का हक़दार

मुहम्मद अरमुग़ान नदवी

हदीसः हज़रत अबूहुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल स0अ0 ने फ़रमायाः मेरा हर उम्मती जन्नत में दाख़िल हो जाएगा, सिवाए उसके जिसने इनकार किया, सहाबा ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल स0अ0! वह कौन व्यक्ति है?जिसने मेरी इताअत की वह जन्नत में दाख़िल होगा और जिसने नाफ़रमानी की उसने इनकार किया।

फ़ायदाः "रसूल की पैरवी" दुनिया व आख़िरत में कामयाबी का रास्ता, जन्नत में दाखिल होने की वजह, शिर्क व कुफ़्र से दूर करने का साधन है। कुरआन करीम में कई जगहों पर इसे स्पष्ट किया गया है। अल्लाह का इरशाद हैः " और जो भी अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी करेगा उसका ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा, जिसके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा–हमेशा के लिए रहेंगे।" (सूरह निसाः 13) कुरआन की आयतों व हदीस से यह बात साफ़ कर दी गयी है कि अल्लाह की रज़ा को पाने, ईमान का दिल की गहराइयों में उतरने, दिल का ग़फ़लत व संगदिली से पाक होना रसूल की पैरवी पर ही टिका हुआ है। अल्लाह तआला का इरशाद हैः "आप कह दीजिए कि अल्लाह और रसूल की बात मानो फिर अगर वे मुंह फेर लें तो अल्लाह इनकार करने वालों को पसंद नहीं करता।" इस आयत से मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह स0अ0 की पैरवी के बग़ैर केवल अल्लाह की इताअत से कोई फ़ायदा नहीं, क्योंकि रसूलुल्लाह स0अ0 की इताअत के बग़ैर अल्लाह की इताअत नामुमकिन है। और यह भी मालूम हुआ कि इस आदेश का किसी का न मानना इतना संगीन जुर्म है कि उसका यह काम उसको कुफ़्र के क़रीब तक पहुंचा देता है। यही कारण है कि उपरोक्त हदीस में भी इताअत न करने वाले व्यक्ति को इनकारी और जन्नत में दाख़िले की भलाई से वंचित कर दिया गया।

रसूलुल्लाह स0अ0 की पैरवी के लिए रसूलुल्लाह स0अ0 से मुहब्बत होना भी बहुत ज़रूरी है, ताकि इनसान अपने महबूब की हर अदा को अपनाने की कोशिश करे क्योंकि बग़ैर मुहब्बत के केवल रस्मी तौर पर किसी की पैरवी करना मुश्किल काम है। लेकिन रसूलुल्लाह स0अ0 से मुहब्बत का यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि इंसान आप स0अ0 की मुहब्बत में बहुत से काम को इताअत समझकर इस हद तक आगे बढ़ जाए कि वही काम उसके आमाल को नष्ट करने और उसके ईमान से ख़ात्मे का ज़रिया बन जाए। आज दुनिया भर में भी जो लोग दिखावे के तौर पर रसूलुल्लाह स0अ0 की मुहब्बत का दम भरते हैं, सही बात यह है कि वे अस्ल मंज़िल से बहुत दूर जा भटकते हैं। आप स0अ0 की इताअत का यह मतलब नहीं है कि आपकी मुहब्बत में इंसान वह काम करे जिनको आप स0अ0 ने अपनी ज़िन्दगी में करना तो बहुत दूर की बात, 'पसंद भी न किया हो और न ही सहाबा किराम से उसका कोई सुबूत हो, जिनसे बढ़कर आप स0अ0 से मुहब्बत करने वाला और कोई नहीं हो सकता है।

रसूलुल्लाह स0अ0 की पैरवी का अर्थ यह है कि इंसान ज़िन्दगी के हर मोड़ पर, इच्छाओं में, दुनिया के सभी रिश्ते में, फ़लसफ़ों, सभ्यताओं को परे रखकर केवल रसूलुल्लाह स0अ0 के पदचिन्हों पर चलने में अपनी भलायी समझे और ऐसे कामों से भी दूर रहे देखने में दिलकश और रसूलुल्लाह स0अ0 से मुहब्बत की निशानी मालूम होती हो मगर अन्दर ही अन्दर ईमान के ख़ात्मे की वजह बन जाती है क्योंकि पैरवी ईमान का हिस्सा है, इसलिए ईमान की पूर्ति के लिए इताअत का होना ज़रूरी है। इंसान अपने हर काम में रसूलुल्लाह स0अ0 की सीरत को सामने रखे। लेकिन ध्यान रहे कि अगर कोई व्यक्ति समाज में सम्मान इत्यादि के लिए जो रसूलुल्लाह स0अ0 के कामों से हरगिज़ मेल नहीं खाता है तो उसके लिए बड़े डरने की बात है कि कहीं उसका यह काम रसूलुल्लाह स0अ0 के दायरे से बाहर होने की वजह से उसको ईमान से ख़ारिज और जन्नत में दाख़िले से वंचित न कर दे।

सीरत-ए-नबवी के आइने में हमारी तस्वीर

जाफ़र मसऊद हसनी नदवी

रबीउल अव्वल के मुबारक मौक़े पर ईद मिलादुन्नबी की महफ़िलें सजती हैं। खुत्बों और बयानों की पुरजोश व वलवला अन्गेज़ तक़रीरें होती हैं। नातिया मुशायरों का एहतिमाम होता है। और पूरी रात ये सिलसिला जारी रह कर सुबह की अज़ान को ख़त्म होता है। लेकिन पूरी रात जागकर जब लोग अपने घरों को लौटते हैं तो वो ये नहीं बता सकते कि हुज़ूर पाक मुहम्मद (स0अ0) की घरेलू ज़िन्दगी और समाजी जीवन कैसा था। वो मेराज का वाक़्या बयान कर सकते हैं, ओहद के युद्ध की तफ़सील आपके सामने रख सकते हैं, आप (स0अ0) के चमत्कारों पर प्रकाश डाल सकते हैं, ग़ार–ए–हिरा में आप (स0अ0) की इबादत का मन्ज़र खींच सकते हैं, मक्के से मदीने हिजरत की कहानी बयान कर सकते हैं, मदीने में होने वाले आप (स0अ0) के इस्तिक़बाल का नक़्शा खींच सकते हैं, आप (स0अ0) की ऊंटनी "कुस्वा" के हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी के दरवाज़े पर ठहरने का मन्ज़र बयान कर सकते हैं, लेकिन आप (स0अ0) के घरेलू और सामाजिक जीवन के बारे में वो बिल्कुल अज्ञान और ख़ामोश नज़र आते हैं। हालांकि सीरत पाक का वो पहलू जो सामाजिक जीवन से संबंध रखता है, मानव के जीवन में बड़ा महत्वपूर्ण है। इबादत के मामले में सीरत हमारा यक़ीनन पूरा मार्गदर्शन करती है बल्कि इबादत को स्वीकार योग्य बनाने में सीरत बुनियादी किरदार अदा करती है। अगर इबादत में सुन्नतों का ध्यान न रखा जाए और आप (स0अ0) के बताए हुए तरीक़े के अनुसार इस इबादत को अन्जाम न दिया जाए तो वो इबादत बेरूह और बेजान है और उस इबादत के वो प्रभाव नहीं पड़ सकते जिसका वादा अल्लाह तआला ने फ़रमाया है।

लेकिन क्या आंहुजूर (स0अ0) ने सारा समय मस्जिद में गुज़ारा?क्या आप (स0अ0) उन आवश्यकताओं से अलग थे जो इन्सानी ज़िन्दगी में पेश आती हैं?क्या आप (स0अ0) ने अपनी ज़िन्दगी का अधिकतर समय रेगिस्तानों और गुफ़ाओं में गुज़ारा जहां इन्सानो से वास्ता कम पड़ता है?अगर ऐसा होता तो इस आयत (अनुवादः बेशक रसूलुल्लाह (स0अ0) की ज़िन्दगी में तुम्हारे लिये बेहतरीन नमूना है) का कोई अर्थ नहीं रह जाता। यक़ीनन आप (स0अ0) की ज़िन्दगी में वो सभी मसले पेश आये जो किसी भी इन्सान को उम्र के किसी भी पड़ाव में पेश आ सकते हैं। आप (स0अ0) का बचपन भी गुज़रा, जवानी भी गुज़री, और जवानी के बाद की उम्र भी गुज़री, बचपन की ख़्वाहिशें, जवानी की आवश्यकतांए, और जवानी के बाद के मसले भी आप को पेश आये, रहन–सहन, ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा, और लेन–देन के सिलसिले में भी आप (स0अ0) ने उम्मत के सामने एक नमूना पेश करके दिखा दिया। हमे इन नमूनों को भी सामने लाने की आवश्यकता है।

हम वज़ू में ख़्याल करते हैं सुन्नतों का, नहाने में एहतिमाम करते हैं सुन्नत के तरीक़े को अपनाने का, पानी पीते हैं तो कोशिश करते हैं कि बैठ कर पियें, और तीन सांसों में पियें, खाने में दायां हाथ इस्तेमाल करते हैं, प्लेट साफ़ करते हैं, उंगलियां चाटते हैं, खाने के बाद की दुआंए पढ़ते हैं, क्योंकि हमारे प्यारे नबी मुहम्मद (स0अ0) ने हमें ये सब बताया बल्कि करके दिखाया, लेकिन क्या हुज़ूर पाक (स0अ0) ने केवल इन्ही चीज़ों में हमारा मार्गदर्शन किया जो हमारे व्यक्तिगत जीवन से संबंध रखती हैं?और क्या आप (स0अ0) ने केवल इन्ही चीज़ों के सिलसिले में हमें हिदायतें दी जिनको इबादत कहा जाता है?

क्या आप (स0अ0) ने घर में रहने का तरीक़ा नहीं बताया?क्या आप (स0अ0) ने सड़क पर चलने का तरीक़ा नहीं बताया?क्या रास्ते पर खड़े रहने वालों पर आप ने कुछ ज़िम्मेदारियां नहीं डाली?क्या पड़ोसियों के साथ अच्छे बर्ताव की शिक्षा आप (स0अ0) ने नही दी?क्या रास्ते से तकलीफ़ देने वाली चीज़ों को हटाने को सदक़ा क़रार नहीं दिया?क्या बीमार को देखने के सिलसिले में आप (स0अ0) की ज़बान ख़ामोश है?क्या मुसलमान भाई से मुस्करा कर मिलना सवाब का ज़रिया नहीं है? क्या नर्म दिली नर्म मिज़ाजी, तवाज़ो और इन्कसारी नबी (स0अ0) की विशेषता में से नहीं हैं?

मां–बाप के साथ अच्छे बर्ताव की ताकीद किसने फ़रमायी?बीवी के अधिकार अदा करने पर ज़ोर किसने दिया?यतीमों, ग़रीबों और बेवाओं के पोषण पर बशारत किसने दी?ईमानदार व्यापारी के लिये हर्श की गर्मी में अर्श के साये का वादा किसने किया?ग़ीबत, चुग़ली, इल्ज़ाम लगाना और ऐब निकालने को बदतरीन गुनाह किसने

क़रार दिया?झूठ, ख़यानत और वादा ख़िलाफ़ी को निफ़ाक़ की अलामतों में किसने शामिल किया?

आप (स0अ0) की ज़िन्दगी में खुशी के लम्हे भी आये, और ग़म व मलाल के भी, आप (स0अ0) ने अपनी चहेती बेटियों को दुल्हन बनाकर रुख़सत भी किया और अपने लख़्त–ए–जिगर हज़रत इब्राहीम को अपने हाथों क़ब्र में उतारा भी, आप (स0अ0) ने जंग के मैदान में इस्लामी लश्कर को आगे बढ़ते हुए भी देखा और पीछे हटते हुए भी, सुलह के वाक़्यात भी आप (स0अ0) की ज़िन्दगी में पेश आये और जंग के भी। आप (स0अ0) ने जान छिड़कने वाले सहाबा किराम रज़ि0 की मुहब्बत भी देखी और खून के प्यासे दुश्मनों की दुश्मनी भी। आप (स0अ0) ने माफ़ करके भी दिखाया और ताकीद करके भी, आप (स0अ0) ने छोड़ा भी और क़दम भी उठाए, आप (स0अ0) का वास्ता क़ैदियों से भी पड़ा और गुलामों से भी, अमीरों से भी और सरदारों से भी, आप (स0अ0) ने खुद भूके रहकर दूसरों को खिलाने का सबक़ दिया, अपनों को वंचित करके ग़ैरों को नवाज़ने का नमूना पेश किया, पसीना सूखने से पहले मज़दूरों को उनकी मज़दूरी की शिक्षा दी, औरतों के साथ नर्मी बरतने का हुक्म दिया। अमीर की पैरवी को आवश्यक घोषित कर दिया।

आप (स0अ0) की मजलिस के बारे में आता है कि वो इल्म व हया की मजलिस होती थी, न उसमें किसी पर इल्ज़ाम लगता था, न किसी का राज़ खुलता था, न किसी के ऐब की चर्चा होती थी, न किसी को रुसवाई का कोई मौक़ा मिलता था, इसमें सब्र की ताकीद होती थी, अमानत व दयानत दारी का सबक़ होता था, ज्ञान व हिकमत की बातें होतीं थीं, इसमें हर बड़ा सम्मानीय होता था और हर छोटे को प्रेम किया जाता था।

ज़रा आप (स0अ0) के घर पर नज़र डालिये, केवल एक कमरा है और वो भी इतना तंग कि आप (स0अ0) नमाज़ पढ़ते हैं तो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 अपने पांव नहीं फैला सकती थीं, इसीलिये रिवायत में आता है कि जब तक आप (स0अ0) क़याम में या रूकु में होते तो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 अपने पांव फैलाये रहतीं और जब आप (स0अ0) सजदे में जाते तो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 अपने पांव समेट लेतीं, तब आप (स0अ0) सजदा फ़रमाते, इतना तंग मकान और इतनी तंग आरामगाह थी आप (स0अ0) की। इस मकान के फ़र्नीचर को तो देखिये, केवल दो चीज़ें थीं। एक तख़्त और केवल एक कुर्सी थी। जिसके चारपाये थे और वो लोहे के थे बाक़ी उसमें लकड़ी लगी हुई थी। इन दो चीज़ों के इलावा कोई चीज़ आप (स0अ0) के घर में बतौर फ़र्नीचर नहीं थी।

दरवाज़े पर पर्दा अवश्य था। लेकिन वो बहुत मामूली, ऐश के लिये नहीं, सजावट के लिये नहीं, मकान की ज़ीनत बढ़ाने के लिये नहीं, बल्कि केवल इसलिये कि अचानक दरवाज़ा खुलने पर बेपर्दगी न हो और अगर दरवाज़े पर कोई खड़ा हो जाए तो सामना न हो।

घर में आप (स0अ0) का वक़्त कैसे गुज़रता था?वो भी हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 की ज़बानी सुनिये, फ़रमाती हैं: आप (स0अ0) सख़्त मिज़ाज शौहरों की तरह नहीं थे, अपने कपड़े खुद सी लेते, खुद ही चप्पल टांक लेते, खुद बकरी का दूध दू लिया करते थे, और घर में आप (स0अ0) इसी तरह काम काज करते थे, जिस तरह दूसरे सारे मर्द अपने घरों में काम करते हैं। आप (स0अ0) फ़रमाया करते थे: तुममे सबसे बेहतर वो है जो अपने घरवालों के लिये सबसे बेहतर हो, और मैं अपने घर वालों के लिये तुम सबसे बेहतर हूँ।

मदीना मुनव्वरा में आप (स0अ0) की मौजूदगी में एक सहाबी हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ शादी करते हैं, न निकाह आपसे पढ़वाते हैं और न निकाह की आपको सूचना देते हैं, लेकिन आप (स0अ0) ने न बुरा माना और न अप्रसन्नता प्रकट की बल्कि वलीमे की ताकीद करके इस्लाम में वलीमे की तरफ़ केवल इशारा किया, लेकिन इसके बाद भी ये नहीं कहा कि अब्दुर्रहमान! निकाह में तो तुम भूल गये, वलीमें में न भूल जाना।

बच्चों के साथ आपका रवैया इतना मुहब्बत भरा होता था कि बच्चे आपसे बहुत घुल–मिल जाते थे। बच्चों से आप (स0अ0) बहुत प्यार करते थे, खुद ही उनको सलाम करते, उनके सरों पर हाथ फेरते, उनके बीच कभी–कभी मुक़ाबला करा देते, जब आप (स0अ0) सफ़र से वापस आते तो घर के बच्चे आप (स0अ0) का स्वागत करने दौड़ते, आप (स0अ0) किसी को प्यार करते, किसी को अपनी सवारी पर पीछे बिठा लेते, किसी को हाथों पर उठा लेते और गोद में ले लिया करते।

ग़रीबों, कमज़ोरों, मरीज़ों से मिलने खुद जाते और उनके ग़म को दूर करने का उपाय करते, उनकी परेशानियों और तकलीफ़ों पर सवाब की उम्मीद दिलाकर उनके एहसास को बदलने की कोशिश करते।

आप (स0अ0) ने उस वलीमे को सबसे बुरा वलीमा

घोषित कर दिया है जिस वलीमे में अमीरों को तो दावत दी जाए और ग़रीबों को, मिस्कीनों को नज़रअन्दाज़ कर दिया जाए, आप (स0अ0) ने फ़रमाया कि मैं मिस्कीनों से मुहब्बत करता हूं।

आप (स0अ0) ने दो ग़रीब बच्चियों का पोषण करने वालों को ये बशारत दी कि वो और मैं इतने क़रीब होंगे जितनी मेरी ये दो उंगलियां और फिर आप (स0अ0) ने अपनी दोनों उंगलियों को मिलाकर दिखाया।

अब आइये एक नज़र डालते हैं कि नबी आख़िरुज़्ज़मा मुहम्मद (स0अ0) की आख़िरी हिदायत बल्कि आप (स0अ0) की वसीयत पर। ज़रा दिल पर हाथ रखकर सोचिये, किसकी वसीयत है?किसको की जा रही है?किस अवसर पर की जा रही है? एक बाप वसीयत करता है तो औलाद के लिये इससे अधिक आर की बात और कोई समझी नहीं जाती कि औलाद ने अपने बाप की वसीयत पर अमल नहीं किया, और अगर वसीयत करने वाली ज़ात नबी (स0अ0) की ज़ात हो। जिसके लिये मुहब्बत व एहतराम और इताअत व फ़रमाबरदारी की ज़रा सी कमी ईमान वाले को ईमान के दायरे से बाहर कर देने के लिये पर्याप्त है। खुद आप ही का इरशाद है कि तुममे से कोई उस समय तक मोमिन नही हो सकता जब तक कि मै उसको उसके मां–बाप और खुद उसकी जान से ज़्यादा प्यारा न हो जांऊ।

आख़िरी हज के मौक़े पर देखिये आप (स0अ0) ने क्या फ़रमाया:

अरबी को अजमी और अजमी को अरबी पर कोई श्रेष्ठता नहीं, तुम सब आदम की औलाद हो, और आदम मिट्टी से बने थे।

जाहिलियत के सभी खून यानि खून के बदले छोड़ दिये गये हैं और सबसे पहले मैं अपने ख़ानदान का खुद रबिया बिन हारिस के बेटे का खून माफ़ करता हूं। जाहिलियत के सभी ब्याज भी समाप्त कर दिये गये और सबसे पहले मैं अपने ख़ानदान का ब्याज अब्बास बिन अब्दुल मुतल्लिब का ब्याज माफ़ करता हूँ। बेशक तुम्हारा खून, और तुम्हारा माल और तुम्हारी इज्ज़त इसी तरह हराम (एहतराम वाला) हैं जिस तरह ये दिन, ये महीना और ये शहर हराम है।

औरतों के मामले में खुदा से डरो, क्योंकि वो तुम्हारे अधीन हैं। वो अपने मामले में अधिकार नहीं रखतीं। इसलिये उनका तुम पर हक़ है। उन्हे खाने, कपड़े का हक़ पूरी तरह हासिल है। तुमने उन्हे खुदा की अमानत के तौर पर अपने अधीन रखा है। मैं तुममे एक चीज़ छोड़कर जा रहा हूं, और तुम इसको मज़बूती से पकड़े रहना, अगर तुमने ऐसा किया तो तुम गुमराह न होगे, वो चीज़ क्या है?अल्लाह की किताब। मेरे बाद गुमराह न हो जाना कि एक दूसरे की गरदन मारने लगो। तुम्हे खुदा के सामने हाज़िर होना पड़ेगा, और वो तुमसे तुम्हारे आमाल के बारे में पूछेगा। अगर कोई हब्शी कान कटा गुलाम भी तुम्हारा सरदार हो और वो तुमको खुदा की किताब के अनुसार ले चले तो उसकी इताअत व फ़रमाबरदारी करना। रस्मोरिवाज के बन्धन में जकड़े, ज़ात व बिरादरी के वर्गो में बंटे, बदले की आग में सुलगते, नफ़रत की आंधियों में हिचकोले खाते, ज़रा ज़रा सी बात पर दूसरी की टोपियां गिराते और पगड़ियां उछालते और सूद के हराम होने का विरोध करते, आज के इस समाज में सीरत पाक के इन नमूनों को भी सामने लाने की आवश्यकता है। और जब तक ज़िन्दगी के हर मैदान में सीरत पाक के नमूनों को नहीं अपनाया जाएगा, उस समय तक दीन पूरा हमारी ज़िन्दगियों में नहीं आ पायेगा। यही (दाख़िल हो जाओ ईमान में पूरे पूरे) (तुमको हुजूर पाक की तरफ़ से जो कुछ भी हुक्म मिले उसको पूरा करो, और जिस काम से आप मना फ़रमायें उससे दूर रहो) का संदेश है।

शेष : सेना के प्रशिक्षण में आप स0अ0 का प्रभाव

(अगर अल्लाह इन्सानों का बचाव इन्सानों के ज़रिये न करता (यानि हक़ वालों को बातिल पर समय–समय पर हावी न करता) तो गिरिजे और क्लेसा (नसारा के) नमाज़ की जगहें (यहूद की) और मस्जिदें (मुसलमानों की) जिनमें अल्लाह का नाम कसरत के साथ लिया जाता है, नष्ट कर दी जातीं)

इन सुधार हेतु संघर्षों का उद्देश्य एक ही आधारभूत चीज़ यानि एक वहशी क़ौम में अक़ीदे की आज़ादी की बहाली थी। इसलिये जगनायक स0अ0 की कार्यप्रणाली व राजनीति कौशल की विशेषता भी उसी प्रकार हैरतअन्गेज़ रूप से प्रकट हुई। जिस प्रकार मक्के में अक़ीदे पर साबित क़दमी, मुसीबतों पर सब्र व ज़ब्त, दावत में स्पष्टता व उद्देश्य की व्याख्या के रूप में प्रकट हुआ था। हम जगनायक स0अ0 की मदनी राजनीति के अस्ल उद्देश्य व मक़सद यानि दीनी आज़ादी पर अनक़रीब बात करेंगे।

धर्मों के अन्तर्गत व्यापकता व सीमितता का टकराव

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

धर्म मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है और उसकी सबसे बड़ी ताक़त है। लेकिन अगर धर्म को उसके वास्तविक दृष्टिकोण से न देखा जाए तो धर्म मनुष्य की सबसे बड़ी कमज़ोरी भी है और मनुष्य की तबाही का कारण भी। और यह संगीन और पेचीदा स्थिति उस समय उग्र रूप धारण कर लेती है जब वास्तविक धर्म के नाम पर वहम व ख़ुराफ़ात, मनुष्य की बुद्धि द्वारा निर्मित आस्था के संग्रह की पैरवी की जाती है या किसी सामयिक व क्षेत्रीय धर्म को व्यापक समझकर उसके प्रचार और उसे लागू करने पर ताक़त व साधन ख़र्च किए जाते हैं।

दुनिया के धर्मों के इतिहास का यह एक बुनियादी पहलू है कि यदि अल्लाह तआला ने साधारणतयः विशेष क्षेत्रों या विशेष युग व विशेष क़ौमों के लिए संदेष्टाओं को भेजा। लेकिन दुनिया के कई कौमों और समुदायों ने अपने धर्म की क्षेत्रीयता और उसका केवल एक युग विशेष तक के लिए होने से इनकार कर दिया और अपनी सारी योग्यताएं उस सीमित व अस्थायी धर्म को व्यापक व स्थायी धर्म साबित करने में ख़र्च कर दीं। जिसके परिणामस्वरूप धर्मों में आपस में टकराव हुआ। आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर धर्म के नाम पर जो ख़ून बहाया जा रहा है उसका मूलभूत कारण सोचने का यही तरीक़ा और सीमित व क्षेत्रीय धर्म की व्यापकता व स्थायित्व साबित करने की यही ज़िद है।

इस क्रम में देखा जाए तो वर्तमानी आकाशीय व अन्तर्राष्ट्रीय धर्मों में यहूदियो का इतिहास बहुत पुराना भी है और क्रान्तियों से परिपूर्ण भी है। फिर भी इसका समय अपनी वृहदता के बाद भी सीमित था अतः हज़रत ईसा अलै0 की संदेष्टा बनाकर भेजे जाने के साथ ही वह धर्म निष्क्रिय कर दिया गया, लेकिन यहूदियों ने इसे स्वीकार करने के बजाए हठधर्मी की और अपने धर्म को व्यापक व स्थायी प्रमाणित करने के लिए हर प्रकार के हथकण्डे अपनाए। षडयन्त्र रचे, ख़ून के धारे बहाए और अपने धार्मिक वर्चस्व को विश्वस्नीय बनाने के लिए लाशों के ढेर भी लगाए यहां तक कि जानबूझ कर हज़रत ईसा अलै0 को सूली पर पहुंचा दिया। जिसके बाद यहूदियत व ईसाईयत अपने बड़प्पन को मनवाने के लिए एक दूसरे से टकराती रही और मनुष्यों की जानों की भेंट चढ़ती रही।

ईसाईयत की भी हैसियत एक क्षेत्रीय व एक युग विशेष के लिए आए हुए धर्म की थी लेकिन उसके ध्वजवाहक आज भी ईसाईयत को व्यापक धर्म ही मानते हैं। और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस ऐतिहासिक धर्म को लोगो के सिरों पर थोपने के लिए प्रयासरत रहते हैं तथा इस कार्य में वे भरपूर साधनों के साथ सैन्य शक्ति के प्रयोग से भी परहेज़ नहीं करते जिसका परिणाम लगातार संघर्ष भयावह तबाही के रूप में हमारे सामने है।

यह वास्तविकता है कि ईसाईयत सामूहिक रूप से यूरोप का "नस्ली अनुभव" बन कर रह गयी। क्लेसा (चर्च) को पवित्र स्थान प्राप्त हुआ और उनके फ़ादर्स को गुनाहों को माफ़ करने या सज़ा देने तक का अधिकार प्राप्त हुआ। इस प्रकार ईसाईयत के नाम पर पोप ने पूरी क़ौम को अपना ग़ुलाम बना लिया। जिसके परिणाम में विद्रोह आरम्भ हुए और ईसाईयत कई भागों में बंट गयी और हर हिस्से का दूसरे हिस्से से संघर्ष होता रहा।

ईसाईयत के सुधार हेतु विभिन्न वैचारिक व ख़ूनी आन्दोलन अस्तित्व में आए लेकिन सभी कोशिशों और मौतों के बावजूद ईसाईयत आज भी पुरानी नस्ली श्रेष्ठता पर ही स्थापित है। और आज उनके धार्मिक केन्द्र बिन्दु वेटिकन सिटी का सबसे बड़ा पादरी वही यूरोपीय व्यक्ति हो सकता है जो गोरा हो। नस्ली श्रेष्ठता पर स्थापित यह धर्म कभी भी समय के चैलेंजों का सामना करने का योग्य नहीं था। यही कारण है कि जब यूरोप में विज्ञान के रूप में इस्लाम की किरणों ने प्रवेश किया तो ईसाईयत ने उसी वैज्ञानिक दृष्टिकोण को धर्म का विरोधी घोषित कर दिया और वैज्ञानिकों पर अत्याचार की हद पार कर दी। उन्हें ज़िन्दा जलाया गया और अपने नज़रियों को वापस लेने पर मजबूर किया गया। लेकिन विज्ञान की शक्ति बढ़ती रही और फिर एक समय ऐसा आया जब ईसाईयत ने विज्ञान के सामने घुटने टेक दिए और विभिन्न प्रकार की आस्थाओं से समझौते की राह अपनायी। जिसके बाद से ईसाईयत पूरी पश्चिमी दुनिया में मनुष्य का निजी मामला बन गयी और सामूहिक कार्यों व शासन से उसका हस्तक्षेप समाप्त हो गया। इस प्रकार ईसाईयत बदलते हुए हालात में स्वयं को नये रूप में लाने में पूर्ण रूप से असफल रही जिसका मूलभूत कारण यही है कि ईसाईयत का एक सीमित समय व एक युग विशेष था।

हमारे देश में भी वैदिक सनातन धर्म के अनुसरण कर्ताओं ने उग्रता के साथ यही दृष्टिकोण अपनाया और एक सीमित व क्षेत्रीय धर्म को राष्ट्रीय धर्म बनाने के लिए उग्र रूप धारण किया, अपितु कहा जाए कि बिना आत्मा वाले धर्म को जीवित व भावुक लोगों पर थोपने का प्रयास किया। इसके लिए विभिन्न आन्दोलन अस्तित्व में आए। संगीन स्कीमें बनायीं गयीं और विभिन्न क़ानूनों के द्वारा लोगों को हरासां किया गया। जिसके परिणामस्वरूप धर्म के नाम पर ज़बरदस्त संघर्ष हुआ और योग्यताओं से भरा हुआ यह देश उन्नति की दौड़ में पिछड़ता चला गया।

सनातन धर्म हर प्रकार से एक क्षेत्रीय, सीमित व युग विशेष तक का धर्म था। इसका अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि जब इस धर्म का समय पूरा हुआ तो यहूदियों के एक समूह आर्या ने इस पर अपना क़ब्ज़ा कर लिया और अपने लाभ की ख़ातिर इसके मानने वालों में ज़ात–पात को बढ़ावा दिया जिसके फलस्वरूप पूरा धर्म निम्नलिखित चार वर्णों: (1– ब्राहम्ण – धार्मिक पेशवा, 2– क्षत्रिय – लड़ने वाले, 3– वैश्य – कृषि करने वाले व व्यापार करने वाले, 4– शूद्र – सेवक) में बंट गया और जात–पात की यह व्यवस्था एक पारिवारिक व नस्ली व्यवस्था में बदल गयी जिसके बाद से नस्ली ब्राहम्णों के हाथों नस्ली शूद्र यानि दलितों का जीवन नरक होता रहा। और इसी नस्ली श्रेष्ठता ने सनातन धर्म की आवश्यकता व महत्व को समाप्त कर दिया और उसके पैरोकार अपनी नस्ल की रक्षा और अपने अस्तित्व को मनवाने में ऐसा उलझे कि उनकी अपनी रक्षा करने की शक्ति ही समाप्त हो गयी। फिर यहां अरब आए, मुग़ल आए, अंग्रेज़ आए तो यहां का सनातन धर्म उनमें से किसी का विरोध न कर सका। और इस वास्तविकता से भी इनकार नहीं कि दुनिया के पुराने धर्मों में शामिल होने के बावजूद आज इसका न कोई राजनीतिक केन्द्र है और सभ्यता का गहवारा! अपितु आश्चर्य की बात यह है कि इस धर्म की शिक्षाएं भी क्रमवार नहीं है यहां तक कि इस धर्म में प्रविष्ट होने के नियम और उसका तरीक़ा और नये लोगों की सामुदायिक हदबन्दी भी मौजूद नहीं है। इसके बावजूद इस धर्म के ठेकेदार इसे राष्ट्रीय और फिर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने के इच्छुक हैं।

तीन अन्तर्राष्ट्रीय धर्मों के अतिरिक्त चौथा अन्तर्राष्ट्रीय धर्म इस्लाम है। इस्लाम ने जो जीवन व्यवस्था व कार्यप्रणाली प्रस्तुत की है उससे उसकी व्यापकता और असीमितता में कोई संदेह नहीं रहता। दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों व विभिन्न युगों में यह अपनी असीमितता और व्यापकता प्रमाणित करता रहा है और दुनिया के धर्मों के इतिहास में अकेला यही धर्म है जिसने दुनिया के सारे धर्मों और जीवन व्यतीत करने की सारी व्यवस्थाओं के ग़लत होने का दावा किया है और उनकी हानियों और अपने लाभ को अमली रूप से प्रमाणित भी किया है।

इस्लाम की व्यापकता की यह दलील है कि इसका आरम्भ तो अरब के रेगिस्तानों से हुआ लेकिन इसकी किरणों ने दुनिया के सभी क्षेत्रों को प्रकाशित किया और बिना किसी व्यवधान और बिना किसी नस्ली या सांस्कृतिक भेदभाव के उसे सभी की स्वीकार्यता प्राप्त हुई और आज बिना किसी राजनीतिक व सैन्य वर्चस्व के इसकी प्रसिद्धी के इसके महत्व व व्यापकता का प्रमाण है।

आज राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर धर्म के नाम पर संघर्षों का मूलभूत कारण यही व्यापकता व क्षेत्रीयता का संघर्ष है। यहूदी धर्म ने कभी यह दावा नहीं किया वह व्यापक धर्म है अपितु किसी को उस धर्म में प्रवेश करने की आज्ञा ही नहीं है। लेकिन अपने स्थायित्व व महत्व पर उसे ज़िद है और वह सभी धर्मों को अपने अधीनस्थ देखने का इच्छुक है। यही कारण है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर धार्मिक विवाद के पीछे उसी की साज़िशें कार्यरत हैं। ईसाई धर्म अपनी व्यापकता पर अड़ा है लेकिन उसकी वास्तविकता व महत्व से वह बिल्कुल ख़ाली है बल्कि उसमें इतनी ताक़त भी नहीं कि हालात के चैलेंज के सामने टिक सके। रही बात सनातन धर्म की तो उसके पास न व्यापकता है न स्थायित्व है और न ही ऐसे किसी दावे की हिम्मत बल्कि वह सत्ता प्राप्ति का एक साधन मात्र बनकर रह गया है जिसके नाम पर राजनीति की बिसात बिछायी जाती है।

किसी भी धर्म की व्यापकता व स्थायित्व के लिए आवश्यक है कि वह जीवन व्यतीत करने के नियमों से परिपूर्ण हो चाहे उसका संबंध निजी जीवन व्यवस्था से हो या सामूहिक जीवन शैली से हो या राजनीतिक इन्तिज़ाम से। इस दृष्टिकोण से किसी भी धर्म के पास मूलभूत नियम भी नहीं है जबकि इस्लाम न केवल मूलभूत नियत उपलब्ध कराता है बल्कि उसके उदाहरण भी प्रस्तुत करता है और क़यामत तक दुनिया की हर क़ौम व हर क्षेत्र के लिए सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था और स्थायी शांति के नियम भी प्रस्तुत करता है लेकिन दूसरे धर्मों के ठेकेदारों के निजी लाभ इस्लाम के राह में सबसे बड़ा रोड़ा हैं जिसके फलस्वरूप पूरी दुनिया वास्तविक शांति व सुकून से वंचित है।

कुरआन मजीद के आदाब

ऐसे मुबारक कलाम को पढ़ने के लिये बड़े अदब व लिहाज़ की ज़रूरत है। वो ऐसा कलाम नहीं है कि बिना ध्यान लगाये और बेदिली से पढ़ा जाये। न वो ऐसी किताब है कि उसको जिस तरह चाहे उठा लिया जाये और जिस तरह चाहे पढ़ लिया जाये। उसके लिये ज़बान की पाकी और दिल की पाकी चाहिये।

खुद अल्लाह तआला का इरशाद है: "इसको पाक लोग ही हाथ लगायें।"

बे अदबी इन्सान को नेमत और इसकी बरकत से महरूम कर देती है।

हज़रत अकरमा रज़ि० का वाक़्या है कि वो कुरआन शरीफ़ खोलते तो खुदा के ख़ौफ़ से बेहोश हो जाते और ज़बान पर, "ये मेरे रब का कलाम है", "ये मेरे रब का कलाम है" जारी हो जाता। यही वो अज़मत थी जिसने सहाबा किराम रज़ि० को सबसे बुलन्द मक़ाम पर पहुंचा दिया था। जब वो कुरआन शरीफ़ पढ़ते तो खुद उनकी ज़िन्दगी में बदलाव आ जाता और सुनने वाले बेखुद हो जाते।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० अपने घर के आंगन में कुरआन शरीफ़ की तिलावत करते तो मक्का के काफ़िरों की घर की औरतें और बच्चे घेरा डालकर खड़े हो जाते और सुन-सुन कर बेखुद होने लगते। कुरआन शरीफ़ की तिलावत सख़्त से सख़्त दिल को मोह लेती और सोज़ व गुदाज़ से दिल भर जाता और आंखे नम हो जातीं। उसके असर के बेशुमार वाक़्ये हैं कि कुरआन की आयतें सुनने के बाद कितने काफ़िर मुसलमान हो गये। वो असर आज भी है लेकिन अगर पढ़ने वाला उसके आदाब और उसके हक़ का लिहाज़ रखे जो कुरआन मजीद के हैं।

कुरआन शरीफ़ के कुछ ज़ाहिरी आदाब:

- ❖ बहुत एहतराम के साथ वज़ू करके क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके पढ़े।
- ❖ जल्दी न पढ़े। तरतील और तजवीद से पढ़े।
- ❖ रोने की कोशिश करे चाहे तकलीफ़ से हो।
- ❖ रहमत की आयतों पर मग़फ़िरत व रहमत की दुआ करे और अज़ाब व वईद की आयत पर खुदा की पनाह मांगे और तक़दीस की आयत पर सुब्हानल्लाहि कहे।
- ❖ दिखावे का शुब्हा हो या किसी मुसलमान की तकलीफ़ का ख़्याल हो तो धीरे पढ़े। खुशलहानी से तिलावत करे।

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

ISSUE: 11 NOVEMBER 2015 VOLUME: 07

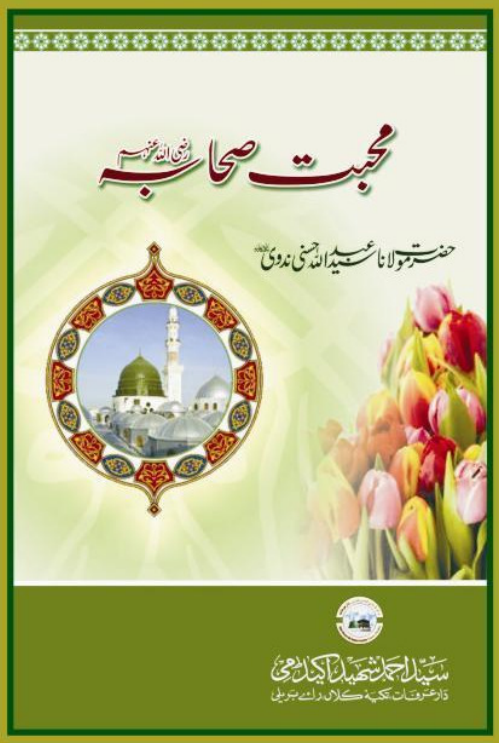

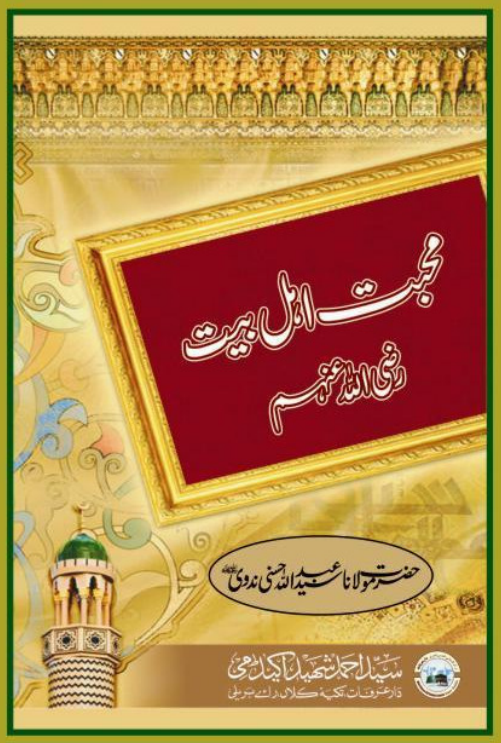

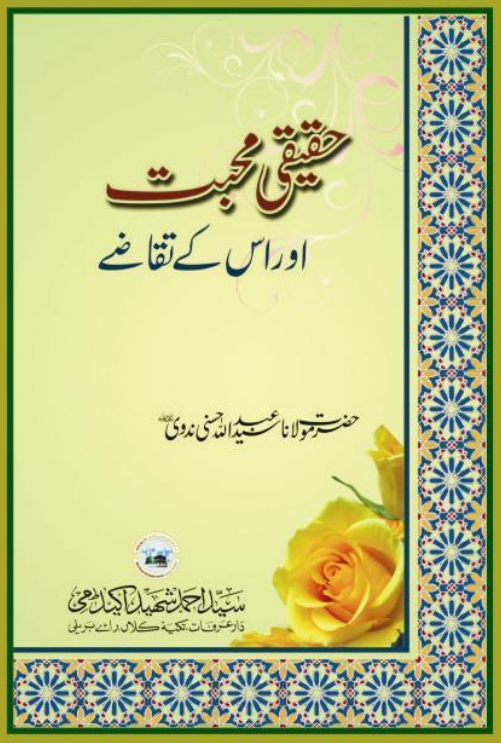

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9792646858
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.